ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

आश्विन (अधि.) २०७७ अक्टूबर २०२०

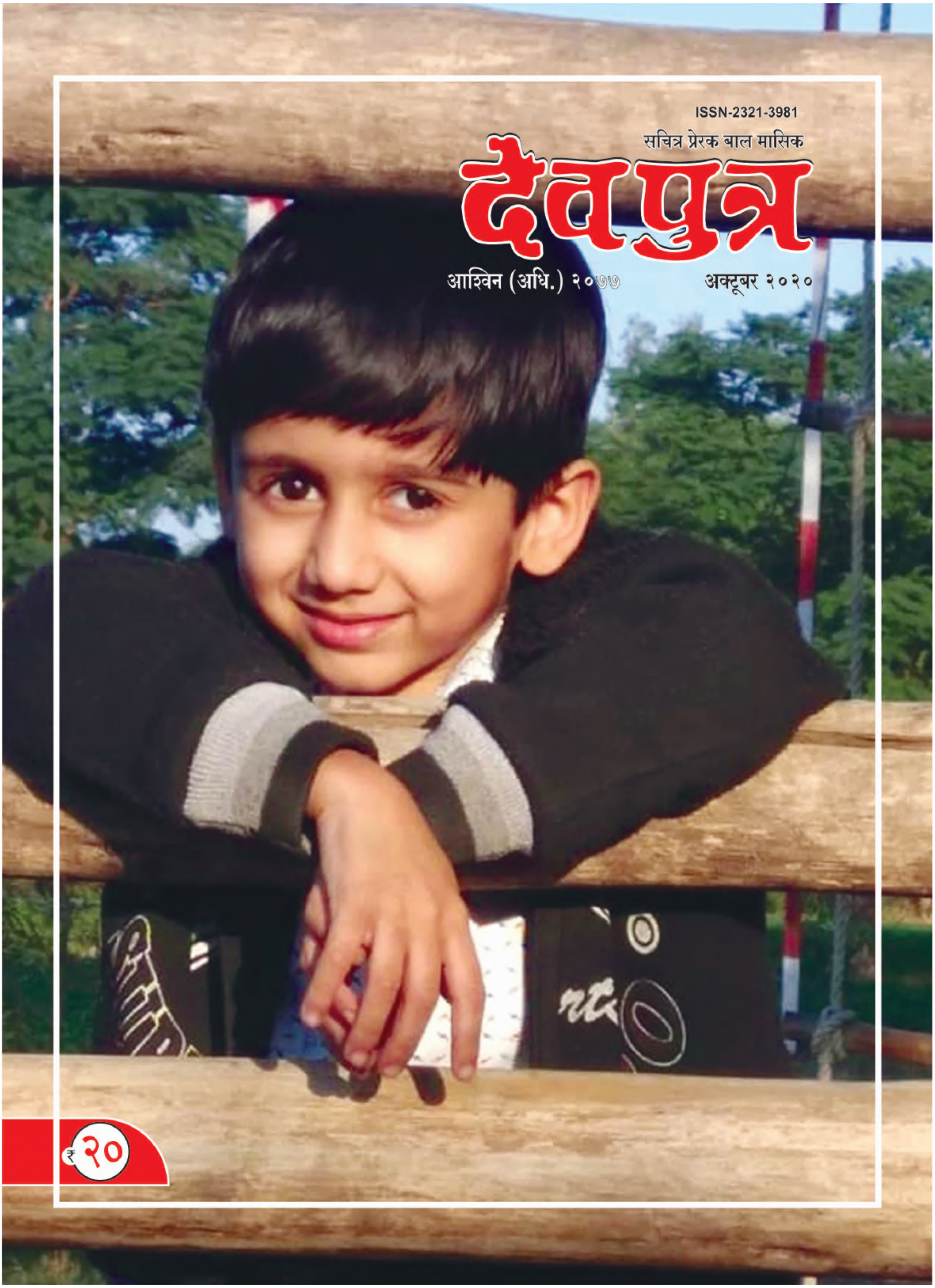

₹ २०

सच्चा विजय पर्व होगा

- डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

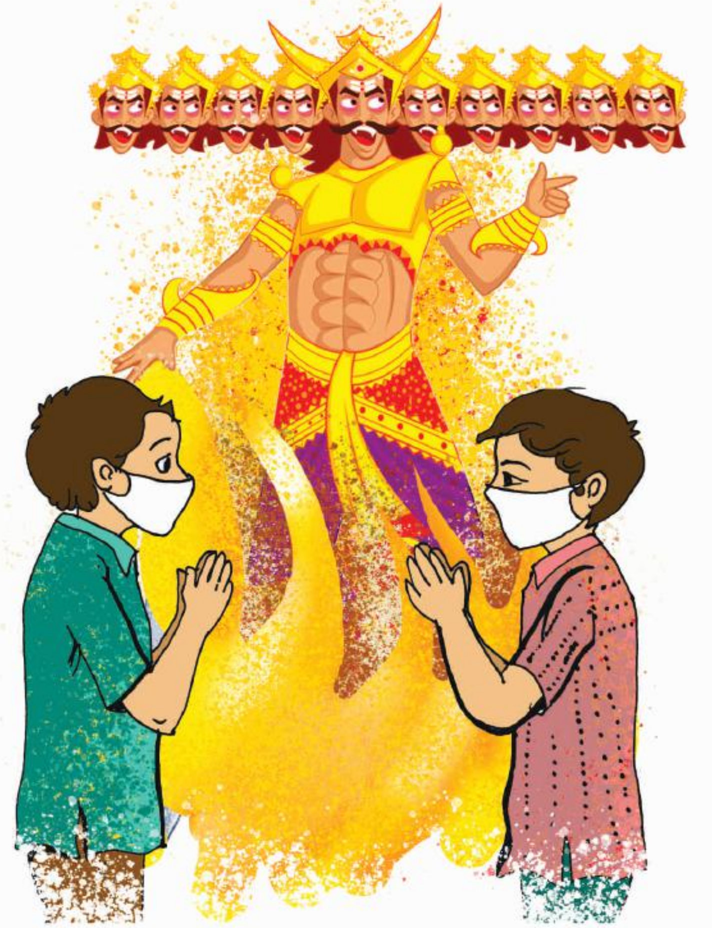

मन के रावण को मार सको
तो सच्चा विजय पर्व होगा।
जन-जन को कर प्यार सको
तो सच्चा विजय पर्व होगा।।

तीरथ-जप-तप-व्रत करते हैं
दुखियों का ध्यान न धरते हैं
कथनी में कुछ करनी में कुछ
रख दो व्यक्तित्व विचरते हैं ।।
सब पर यदि कर उपकार सको
तो सच्चा विजय पर्व होगा।।

जीवन मूल्यों का पतन आज
देखो हर ओर प्रभावी है।
हर गली-गाँव, चौराहे पर-
रावण स्वर सब पर हावी है।
इनका यदि कर प्रतिकार सको
तो सच्चा विजय पर्व होगा।।

वध अहंकार का करो आज
आसुरी वृत्तियों का विनाश।
फिर से देवत्व प्रतिष्ठित हो-
हो सदाचार का फिर प्रकाश।
शुभ संकल्पों को धार सको-
तो सच्चा विजय पर्व होगा।।

- हरदोई (उ.प्र.)

विश्व का सर्वाधिक प्रसार संख्या कीर्तिमान

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

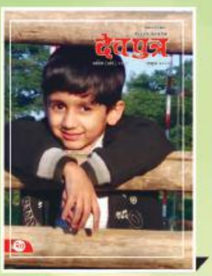

अश्विन (अधि.) २०७७ ▪ वर्ष ४१
अक्टूबर २०२० ▪ अंक ४

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के रूप में बाल जगत के आँगन में एक नई भोर का आगमन हुआ है। इस भोर का हम सब पूरे मन से स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं। मनुष्य में मनुष्यता के विकास का शिक्षा एक महत्वपूर्ण कारक है लेकिन शिक्षा क्या है? इस विषय पर भारतीय दृष्टि से बहुत विचार स्वतंत्र भारत में अभी तक न हो पाया था यदि थोड़ा बहुत हुआ भी तो वह क्रिया रूप में न ढल पाया और परिणाम यह हुआ कि आप जैसे बच्चे उसका लाभ नहीं ले सके।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० आपके उज्ज्वल और पूर्व विकसित भविष्य की अपार संभावनाओं से भरी है। शासन प्रशासन अभिभावक एवं शिक्षक-आचार्यों तक सभी भरपूर आशा, विश्वास और उत्साह के साथ इस सकारात्मक एवं युगान्तरकारी परिवर्तन के लिए स्वयं को तैयार कर रहे हैं। लेकिन बच्चो! अन्ततः यह सब आपके लिए है। अतः आपको भी इसके लिए तैयार रहना होगा। अभी तक आप अपनी शिक्षा और उससे बनने वाले अपने भविष्य के लिए अपनी कल्पना का चित्र एक बनी बनाई चौखट में ही जड़ने को विवश थे। इस चित्र में भरे जाने वाले रंग भी प्रायः बड़े तय कर दिया करते थे। लेकिन अब अवसर है जब आप चित्र के मान से चौखट बना सकेंगे अर्थात चित्र छोटा या बड़ा है तो उसे चौखट के लिए बड़ा या छोटा करने की आवश्यकता नहीं और न उस चित्र में भरे जाने वाले रंग ही पूर्व निश्चित रंग होंगे आप अपनी प्रतिभा, अपने रुचि और अपने देश की आवश्यकता के अनुसार अपने भविष्य का चित्र बना सकेंगे और नए रंगों का निर्माण भी कर सकेंगे। आप समझ ही गए होंगे में जिस चित्र की बात कर रहा हूँ आप उसे 'कॅरियर' कहते हैं।

बच्चो! मैंने इस अवसर को एक नई भोर कहा है और भोर का भरपूर आनंद वही ले सकते हैं जो भोर का स्वागत जागते हुए करते हैं। आप सौभाग्यशाली है जो इस नए आरंभ के साक्षी होंगे यह रोमांचपूर्ण आनंद किसी नई रेलगाड़ी की पहली यात्रा को मिलने वाले आनंद जैसा है। वास्तव में आप एक नए इतिहास के प्रथम पृष्ठ पर अपना नाम अंकित करवाने वाले बच्चे हैं। आपका स्वागत है अभिनंदन है और हृदय से शुभकामना भी।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- दुर्गा पूजा की सीख - नीतीश चौधरी ०५
- मोहल्ले का दशहरा - ललित शौर्य ०८
- क्रांति जीवन - रामकरण १२
- पुरस्कार - तारादत्त जोशी ३५
- पुतले की सीख - हरिन्दरसिंह गोगना ३९
- आँख खुल गई - उषा जायसवाल ४२
- थोड़ी सी हिम्मत - पवन कुमार वर्मा ४६

लघु कहानी

- बालमन - विनीता मोटलानी ४८

लोककथा

- सातवीं रानी - मूल अंग्रेजी- मानसरंजन महापात्रा ३०
  - अनुवाद- सुषमा यदुवंशी

एकांकी

- डाकघर से... - तपेश भौमिक १६

प्रसंग

- स्वाभिमान के धनी - राजनारायण चौधरी १०
- बच्चे की भेंट - डॉ. रामसिंह यादव १०
- एक महान वैज्ञानिक - डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव ११
- साहस की विजय - सांवलाराम नामा ४८

कविता

- सच्चा विजय पर्व होगा - डॉ. रोहिताश्व अस्थाना ०२
- मतलाना चीन के... - कल्याणमय आनंद २४
- विजय दशमी - ओम उपाध्याय ३२
- बन्द देश का कोना... - केशरीप्रसाद पाण्डेय 'बृहद्' ३४
- चंदामामा - पवन कुमार पहाड़िया ४१
- ताक धिना धिन - अनुरूपा चौघुले ५१

स्तंभ

- संस्कृति प्रश्नमाला - ०६
- देश विशेष -श्रीधर बर्वे २०
- स्वयं बने वैज्ञानिक - राजीव तांबे/सुरेश कुलकर्णी २३
- सचित्र विज्ञान वार्ता -संकेत गोस्वामी २६
- आओ ऐसे बनें - मदन गोपाल सिंघल २८
- छः अंगुल मुस्कान - विष्णुप्रसाद चौहान ३१
- आपकी पाती -
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग -
- विषय एक कल्पना अनेक - राजकुमार जैन 'राजन' ४४
  - गोविन्द भारद्वाज ४४
  - दुर्गाप्रसाद शुक्ल आजाद ४५
- यह देश है वीर जवानों का ४९
- पुस्तक परिचय ५०

बाल प्रस्तुती

- गलती - अलीशा सक्सेना २५
- चींटी को जब गुस्सा... - राज आर्यन ४०

चित्रकथा

- मुफ्त में नहीं - देवांशु वत्स ०७
- सबसे बड़ा झूठ - संकेत गोस्वामी १५
- घड़ी की कीमत - देवांशु वत्स ३३

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** **चालू खाता (Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

दुर्गा पूजा की सीख

कहानी

नीतीश चौधरी

विद्याभारती के आवासीय विद्यालय में सभी बच्चे बड़े प्रसन्न थे। दुर्गा पूजा के अवसर पर 10 दिनों की छुट्टियाँ कल से विद्यालय में हो रही थी। सभी बच्चे 10 दिनों की छुट्टी पर अपने-अपने घर जा रहे थे।

छुट्टियों में घर जाने के नाम पर इस बार बच्चे प्रसन्न होने के साथ ही साथ कुछ उदास भी थे। गिरधर, वैंकट, सुशील, अभिराज, युगल, लक्ष्मण, शुभम् सभी छात्रावास में एक साथ ही रहते थे और सभी में गहरी मित्रता थी, लेकिन कुछ दिनों से अभिराज और युगल में आपस में बातें नहीं हो रही थीं। इस बात की जानकारी विद्यालय के प्राचार्य जी को भी थी।

हुआ ये था कि पिछले महीने अभिराज और युगल दोनों टीमें बनाकर आपस में क्रिकेट खेल रहे थे। एक टीम का कप्तान जहाँ अभिराज था, वहीं दूसरी टीम का कप्तान युगल था। अभिराज के बॉल पर रन लेते समय युगल रन आउट हो गया था, जिसे युगल नहीं मान रहा था। वह अपने आप को नॉट आउट बता रहा था। इसी बात पर दोनों झगड़ पड़े थे। झड़प और जोरदार बहस होने के बाद दोनों टीमों में हाथापाई हो गई, जिसमें कुछ बच्चों को चोटें आ गई।

प्राचार्य को जब इस बात की जानकारी हुई तो उन्होंने अभिराज और युगल को एक सप्ताह के लिए खेल के मैदान पर जाने से मना कर दिया। इस घटना के बाद से दोनों में बातचीत बंद हो गई। कई दोस्तों ने दोनों में समझौता कराने का प्रयास किया, परन्तु फिर भी दोनों में मेलमिलाप ना हो पाया।

कल से विद्यालय में छुट्टी थी और आज प्राचार्य के निर्देश पर बच्चों ने वंदना सभागृह में बाल सभा का कार्यक्रम रखा था, जिसमें कुछ बच्चों के द्वारा लघु नाटिका का मंचन भी होना था।

समय पर वंदना सभागृह में सभी छात्रों की उपस्थिति में संगीत के आचार्य ने दीप-प्रज्वलित कर और सामूहिक प्रार्थना के बाद बाल सभा कार्यक्रम का उद्घाटन शुरू किया।

सबसे पहले लक्ष्मण, गिरधर, वैंकट और सुशील ने लघु-नाटिका "एकता की ताकत" का मंचन किया, जिसमें उन्होंने सामूहिक एकता को व्यावहारिक रूप में करके दिखाया। इस लघु नाटिका में चारों बच्चे किसान बने थे, जो आपस में मिलकर सद्भावनापूर्वक गाँव में रहते थे और सभी तीज-त्योहार को मिलकर उत्साहपूर्वक मनाया करते थे। कुछ समय के बाद आपस में चारों में गलतफहमियां हो जाती हैं और सभी एक दूसरे से झगड़ पड़ते हैं। झगड़े होने के बाद चारों में बातचीत बंद हो जाती है। मनमुटाव अधिक होने से बाद अब इनके तीज-त्योहार और आपसी सद्भाव सभी फीके हो गए। चारों किसान उदास रहने लगे।

फिर लक्ष्मण ने अंत में निष्कर्ष के रूप में सभी को बताया कि जब तक हम अपने परिवार और समाज में मिलकर रहते हैं तब तक हमें सबकुछ अच्छा लगता है, लेकिन जब हम छोटी-छोटी बातों में पड़कर परिवार और समाज से अलग हो जाते हैं तब हमें कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। इसलिए हमें अपने व्यक्तिगत अहं को छोड़कर आपस में सबसे मिलजुल कर रहना चाहिए।

लघु नाटिका समाप्त होने के बाद सभी बच्चे खुश हुए। अभिराज और युगल की आँखें झुकी हुई थीं। सभी को पता था कि दोनों आपस में बातें करना चाहते हैं लेकिन अपने अहं के कारण कोई आगे नहीं बढ़ पा रहा था।

लघु नाटिका समाप्त होने के बाद प्राचार्य ने सभी से दुर्गा पूजा और दशहरे के बारे में बताने को कहा।

अभिराज ने तब कहा कि दुर्गा पूजा भारत का बहुत ही महत्वपूर्ण त्योहार है जिसका धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सांसारिक महत्व है। इन दिनों सभी मंदिरों को सजाया जाता है और वातावरण पूरी तरह से भक्तिमय हो जाता है। इन दिनों कुछ लोग अपने घरों में ही सभी व्यवस्थाओं के साथ नवदुर्गा की पूजा करते हैं और उपवास रखते हैं। दुर्गा पूजा के रूप में हम स्त्री पूजा करते हैं।

दुर्गा पूजा के बारे में अभिराज से सुनकर सभी बड़े प्रसन्न हुए।

इसके बाद युगल ने दशहरा के बारे में बताया। उसने कहा कि इस उत्सव का संबंध माता दुर्गा से ही है क्योंकि दुर्गा पूजा के उपरांत ही यह उत्सव होता है और इसमें महिषासुर के विरोध में देवी के साहसपूर्ण कार्यों का भी उल्लेख मिलता है। दशहरा या विजयादशमी, नवरात्रि के दसवें दिन मनाया जाता है। कहा जाता है कि भगवान राम ने माता दुर्गा की नौ दिन पूजा करने के उपरांत ही दशमी के दिन दससिर वाले रावण का अंत किया था और बुराई और असत्य पर विजय प्राप्त की थी।

प्राचार्य जी दशहरा के बारे में युगल से सुनकर प्रसन्न हुए। इसके बाद प्राचार्य जी ने कहा कि हमारा देश त्योहारों का देश है। त्योहार सभी के जीवन में हर्षोल्लास एवं नवीनता का संचार करते हैं। दुर्गा पूजा जहाँ अनीति, अत्याचार तथा बुरी शक्तियों के नाश के प्रतीक स्वरूप मनाया जाता है, वहीं दशहरा बुराई पर अच्छाई की जीत और असत्य पर सत्य की जीत के रूप में मनाया जाता है।

इसके बाद प्राचार्य जी ने फिर से अभिराज और युगल को मंच पर बुलाया और कहा कि छात्रों को समाज में फैली बुराइयाँ और अनीतियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए और समाज को अच्छा और शक्तिशाली बनाने में सहयोग देना चाहिए। संस्कारी और सुदृढ़ समाज को गढ़ने में सामर्थ्यवान और ज्ञानवान लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसलिए हम सब को एकजुट होकर किसी भी समस्या का सामना करना चाहिए ताकि माँ दुर्गा के आशीर्वाद में किसी भी क्षेत्र में सफलतापूर्वक हम आगे बढ़ सकें।

प्राचार्य जी की बातें दोनों को समझ में आ गई। दोनों मुस्कुराकर एक दूसरे के गले मिले और कहा कि अब वे कभी भी छोटी-छोटी बातों को अपने अहं का विषय नहीं बनाएंगे और साथ ही साथ अपने समाज और देश को वैभवशाली बनाने में मिलकर सहयोग करेंगे।

दुर्गा पूजा और दशहरा के आगमन के साथ ही छात्रों के आपसी मतभेद दूर हो जाने से सभी बच्चे प्रफुल्लित हो उठे। अब वे दुर्गा की छुट्टी में दुगुने उत्साह से घर जाने के लिए तैयार हो रहे थे।

- मलहरा (झारखण्ड)

संस्कृति प्रश्नमाला

- किस नदी के तट पर श्रीराम ने महाराज दशरथ की अंतिम क्रिया की थी?
- भीम और दुर्योधन ने गदायुद्ध की शिक्षा किनसे प्राप्त की?
- वह मंदिर जहाँ से श्रीकृष्ण ने देवी रुक्मिणी का हरण किया था, अरुणाचल प्रदेश के किस स्थान पर है?
- महाराज पृथु के नाम से धरती का नाम पृथ्वी हुआ। हमारी परम्परा के 24 अवतारों में पृथु कौन से अवतार हैं?
- पुणे के लाल महल में घुसे किस मुगल सेनापति की अंगुलियाँ महाराजा शिवाजी ने काट दी थीं?
- केवल गोवंश की चिकित्सा के लिए प्राचीन समय में कौन सा ग्रंथ लिखा गया?
- विवाह मंडप से पलायन कर क्रांति कार्य में लगने वाले प्रसिद्ध क्रांतिकारी कौन थे?
- जालौर जिले का भीनमाल किस विश्वविख्यात महाकवि की जन्मस्थली है?
- भारतीय मजदूर संघ की स्थापना किसने एवं कब की?

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

मुफ्त में नहीं

चित्रकथाः देवांशु वत्स

मोहल्ले का दशहरा

कहानी
इंजी. ललित शौर्य

शांतिपुर मोहल्ले के बच्चों को दशहरे की बड़ी अतुरता से प्रतीक्षा रहती थी। क्योंकि दशहरा समिति हर साल एक बड़ा सा रावण बनवाती थी। जिसे मोहल्ले के एक चौराहे पर जलाया जाता था। सारा कार्यक्रम शाम के समय सम्पन्न होता था। शांतिपुर मोहल्ले का दशहरा पास के अन्य मोहल्लों में भी प्रसिद्ध था। दूर-दूर से लोग रावण दहन का कार्यक्रम देखने आते थे।

लेकिन इस बार दशहरा समिति के सदस्यों में आपस में कुछ मनमुटाव हो गया था। इसी के चलते दशहरा समिति भंग हो चुकी थी। जिस कारण इस वर्ष का दशहरा कार्यक्रम टाला जा चुका था। ये खबर पूरे शांतिपुर मोहल्ले को पता चल चुकी थी। इस निर्णय से सबसे ज्यादा उदासी शांतिपुर मोहल्ले के बच्चों में छाई हुई थी। सभी बच्चे बहुत परेशान थे। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या किया जाए।

सावन, शांतिपुर मोहल्ले में ही रहता था। वो बचपन से ही दशहरा कार्यक्रम में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेता आ रहा था। कार्यक्रम न होने की खबर ने उसे बहुत दुखी किया था। सावन ने मन में संकल्प ले लिया था कि, "कुछ भी हो जाए वो कार्यक्रम करवा कर ही रहेगा।" लेकिन वो करे भी क्या। वो तो बच्चा ही था। अभी वह पंद्रह साल का ही तो था। लेकिन फिर भी उसने दशहरा कार्यक्रम करवाने की ठान ही ली थी।

एक दिन सावन ने शांतिपुर मोहल्ले के बच्चों की बैठक बुलाई। उसने सभी बच्चों से कहा, "हम सभी जानते है कि इस बार हमारे मोहल्ले में दशहरा कार्यक्रम नहीं होने जा रहा है। क्या तुम इस निर्णय से खुश हो।"

सभी बच्चों ने निराशापूर्वक एक स्वर में कहा, "नहीं हमें ये निर्णय बिलकुल पसंद नहीं है। हम बिलकुल भी प्रसन्न नहीं हैं।"

"अगर तुम लोग प्रसन्न नहीं हो तो क्यों न हम सब मिलकर दशहरा कार्यक्रम करें।" सावन ने बच्चों में उत्साह पैदा करते हुए कहा।

बच्चों के बीच में से एक बच्चे जिसका नाम शिवराज था, ने खड़े होकर कहा, "लेकिन हम सब कैसे इतना बड़ा कार्यक्रम करवा सकते हैं। यह तो असंभव है।"

"असंभव कुछ भी नहीं शिवराज! अगर हम सब मिलकर प्रयास करें तो कार्यक्रम हो सकता है।" सावन ने अपनी बात पर बल देते हुए कहा।

"कार्यक्रम के लिए रुपये कहाँ से आयेंगे।" अनिल बोल पड़ा।

"रुपयों की व्यवस्था वैसे ही होगी जैसे अभी तक

होती आई है। हम पूरे मोहल्ले से चंदा करेंगे।" सावन ने अपनी योजना बताते हुए कहा।

"वाह! ये तो अच्छी बात है। अगर हम सब एक होकर काम करेंगे तो कार्यक्रम किया जा सकता है।" चंदन ने कहा।

"हाँ! हम सबको मिलकर ही काम करना होगा। कार्यक्रम की पूरी योजना बनानी होगी। सभी को काम बाँटे जायेंगे।" सावन ने कहा।

"समय बहुत कम है। सात दिन बचे हैं। सब कुछ शीघ्र करना होगा।" प्रदीप ने कहा।

"हम सब कल से ही चंदा इकट्ठा करते हैं। साथ ही सारे आवश्यक सामान भी जुटाते हैं। तुम सब लोग कल सुबह पीपल के पेड़ के पास मिल जाना। फिर एक साथ पूरे मोहल्ले में चलेंगे।" सावन ने कहा।

सभी बच्चे सावन की बातों से सहमत थे। बैठक समाप्त हो चुकी थी। सभी बड़े उल्लास के साथ अपने घर को जाने लगे। बच्चे कार्यक्रम को लेकर उत्साहित भी थे।

अगले दिन सभी बच्चे पीपल के पेड़ के पास इकट्ठा हो गए। उनके हाथों में चंदे के लिए डिब्बा था। सभी ने पूरे मोहल्ले में घर-घर जाकर चंदा इकट्ठा किया। कुछ लोगों ने उनका उपहास उड़ाया, कुछ ने डाट लगाई और कुछ ने अच्छा सहयोग किया। साथ ही बच्चों की बहुत प्रशंसा भी की।

पूरे मोहल्ले में घूमने के बाद जब बच्चे इकट्ठे हुए तो उन्होंने चंदे के पैसों को गिनना शुरू किया। लगभग सोलह हजार रुपये इकट्ठा हो चुके थे। बच्चे इतनी धनराशि से बहुत उत्साहित थे। यह उनकी कल्पना से बहुत अधिक थे।

"हमें मोहल्ले से बहुत अच्छा चंदा प्राप्त हुआ है। लोगों ने हम पर बहुत विश्वास किया है। अब हमें उनको एक अच्छा कार्यक्रम कर के दिखाना है।" सावन ने सभी मित्रों से कहा।

"हम मिलकर बहुत अच्छा और स्मरणीय कार्यक्रम करेंगे।" शिवराज ने कहा।

सावन ने सभी बच्चों को कल के काम पर जुट जाने और समय पर आने को कहा।

अगले दिन से सावन और उसके सभी साथियों ने पुतला और पंडाल बनाने का काम प्रारंभ कर दिया। माइक आदि की व्यवस्था भी कर ली। टेंट हाऊस से कुर्सियों का आर्डर भी दे दिया।

देखते ही देखते दशहरा वाला दिन भी आ गया। बच्चों ने पूरे शांतिपुर मोहल्ले में आमंत्रण कार्ड भी बांट दिए थे। दशहरा समिति के सदस्यों को भी कार्यक्रम में बुलाया गया।

शाम होते ही चौराहे पर बड़ी भीड़ जमा हो गई। सभी लोग कार्यक्रम की व्यवस्था देखकर चकित हो गए। किसी ने भी इतनी अच्छी व्यवस्था पिछले वर्षों में कभी नहीं देखी। समय पर कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। रावण दहन किया गया। सभी ने भगवान श्रीरामचन्द्र जी के जयकारे लगाये।

सावन ने माइक संभालते हुए कहा, "आप सभी के सहयोग के लिए आभार। हम इतना अच्छा कार्यक्रम बिना आप लोगों के सहयोग के नहीं कर सकते थे। जब मैं दशहरा कमेटी के पूर्व अध्यक्ष जी को दो शब्द कहने के लिए बुलाता हूँ।

"आज के इस कार्यक्रम को देखकर हमारी आँखें खुल गई। जो हम न कर सके वह सावन और उसके साथियों ने कर दिखाया। इन्होंने शांतिपुर मोहल्ले की परम्परा को टूटने नहीं दिया। हमें इन बच्चों से कुछ सीखना चाहिए। मैं आप सभी लोगों से कहना चाहता हूँ। अब यह दशहरे की परम्परा कभी नहीं टूटेगी। अगले वर्ष से दशहरा समिति और यह बाल मण्डली मिलकर और भी भव्य कार्यक्रम करेंगे।" अध्यक्ष जी ने कहा।

ये सुनकर कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने जोर से तालियाँ बजाई। कार्यक्रम समाप्त हुआ। सभी अपने अपने घरों को जाने लगे। चारों ओर सावन और उसके मित्रों की प्रशंसा सुनाई दे रही थी।

- मुवानी (उत्तराखण्ड)

(लाल बहादुर शास्त्री जयंती : २ अक्टूबर)

स्वाभिमान के धनी

प्रसंग

राजनारायण चौधरी

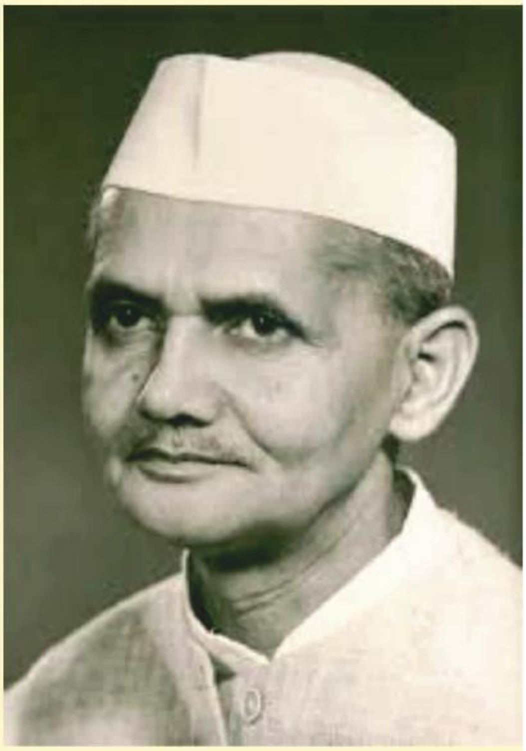

स्व. लालबहादुर शास्त्री के बचपन की घटना है। तब वे विद्यालय में पढ़ते थे। एक दिन वे अपने कुछ साथियों के साथ गंगा पार मेला देखने गये। मेले में उनके सारे पैसे खर्च हो गए। अब लौटते में गंगा पार होने के लिए वे नाविक को भाड़ा कहाँ से चुकाते? जब उनके साथी वापस होने लगे तो उन्होंने उनसे कह दिया कि वे कुछ देर और मेला देखेंगे। जब उनके सारे साथी लौट गए, तब वे गंगा के किनारे आये। धोती-कुर्ता खोला और कूद पड़े पानी में। बाढ़ का समय था। नदी में लबालब पानी का वेग अद्भुत था। नाविक लाख रोकता रहा पर वे कहाँ मानने वाले थे। आखिर तैरकर गंगा पार हो ही गये।

दरअसल शास्त्री जी स्वाभिमान और आत्मसम्मान के इतने धनी थे कि उन्होंने अपने साथियों को भी अपने पास पैसा न होने की बात कहना उचित नहीं समझा।

- हाजीपुर (बिहार)

(गांधी जयंती : २ अक्टूबर)

बच्चे की भेंट

प्रसंग

डॉ. रामसिंह यादव

जनभावनाओं का आदर करना महात्मा गांधी एक विशिष्ट गुण था, न केवल आदर करना वरन छोटे से छोटे बच्चे की भावना को भी हमेशा महत्व देते थे। सन् १९१५ की बात है बम्बई (मुंबई) में कांग्रेस अधिवेशन चल रहा था। गाँधीजी अपने साथियों सहित मारवाड़ी विद्यालय में ठहरे हुए थे। एक दिन उन्हें कहीं जाना था। मेज पर रखी सभी चीजें उन्होंने संभाल कर रख दी। इसी बीच काका कालेलकर ने देखा कि वे कोई चीज ढूँढ रहे हैं और उसके न मिलने पर परेशान दिखाई दे रहे हैं। काका कालेलकर ने पूछा बापू आखिर क्या गुम गया है? गाँधीजी ने बताया एक छोटी सी पेंसिल है जो मिल नहीं रही है। काका कालेलकर ने अपनी जेब से एक नई बड़ी पेंसिल निकालकर गाँधीजी की ओर बढ़ाते हुए कहा जाने दीजिए उसे। आप इससे अपना काम चला लेना।

गाँधीजी ने काका कालेलकर की पेंसिल लेने से इंकार करते हुए कहा- "नहीं नहीं मुझे वह छोटी सी पेंसिल ही चाहिए। उसे मैं खो नहीं सकता। वह पेंसिल मुझे मद्रास (अब चेन्नई) स्टेशन पर एक लड़के ने दी थी। कितने प्यार से लाया था वह। मैं उसे कैसे खो सकता हूँ? थोड़ी देर बाद वह दो इंच की छोटी पेंसिल मिल गयी तब बापू को चैन मिला।

- उज्जैन (म.प्र.)

(जन्म : 6 अक्टूबर)

एक महान वैज्ञानिक : डॉ. मेघनाथ साहा

लघु आलेख

डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव

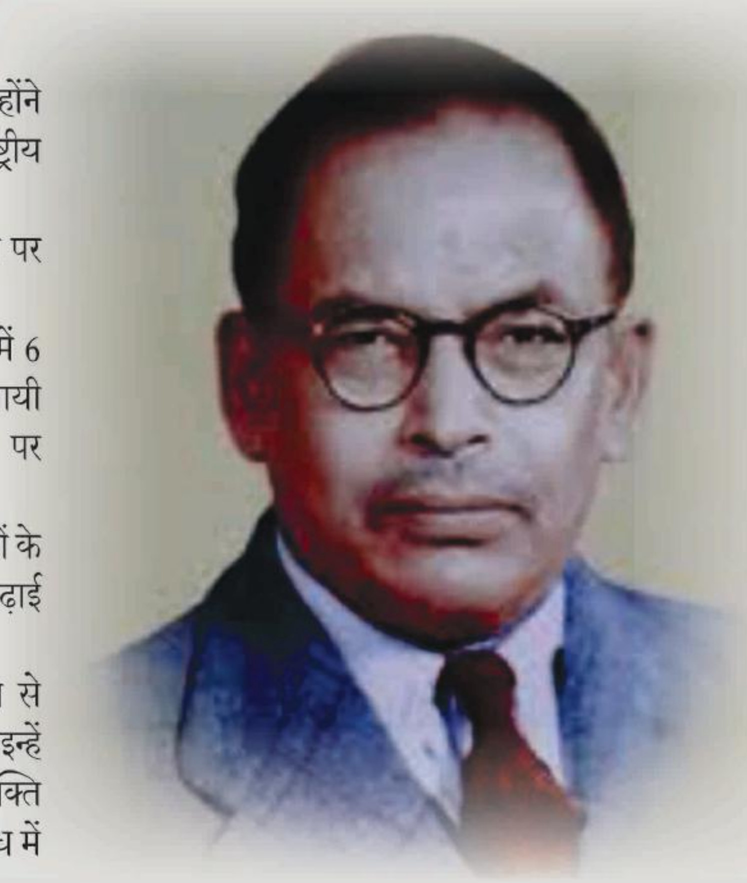

डॉ. मेघनाथ साहा ऐसे महान वैज्ञानिक थे जिन्होंने अपने वैज्ञानिक अनुसंधानों के बल पर अन्तरराष्ट्रीय क्षितिज पर काफी प्रसिद्धि प्राप्त की।

डॉ. साहा ने सौर वर्ण मंडल के आयनीकरण पर विशेष रूप से अनुसंधान किया।

डॉ. साहा का जन्म बांग्लादेश के ढाका जिले में 6 अक्टूबर, 1896 में हुआ था। पिता एक प्रसिद्ध व्यवसायी थे वे साहा को भी अपने जैसा बनाना चाहते थे पर मेघनाथ की रुचि व्यवसाय में बिल्कुल नहीं थी।

बचपन से प्रत्येक कक्षा में मेघनाथ अच्छे अंकों के साथ प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होते। इनकी अधिकांश पढ़ाई कोलकाता में ही हुई।

बाद में मेघनाथ साहा ने प्रेसीडेन्सी कॉलेज से एम.एससी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके बाद इन्हें कोलकाता विश्वविद्यालय में प्राध्यापक की नियुक्ति मिल गई। यहां वे निरन्तर कुछ न कुछ वैज्ञानिक शोध में लगे रहे।

सन् 1923 में डॉ. मेघनाथ साहा इलाहाबाद (उ.प्र.) आ गए। यहाँ प्रयाग विश्वविद्यालय में इन्हें भौतिक विभाग में प्राध्यापक बनाया गया। डॉ. साहा ने अपने प्रयासों से प्रयाग में नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज की स्थापना की। कुछ समय बाद वे पुन: कोलकाता आ गए। इन्हें विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का सदस्य बनाया गया।

डॉ. साहा बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे इन्होंने विज्ञान विषय पर अनेक पुस्तकों की रचना की। अनेक शोधपूर्ण लेख लिखे, जो देश-विदेश की शोधपूर्ण पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे।

डॉ. साहा की 'थ्योरी ऑफ थर्मल आयोनाइजेशन' को बहुत सराहा गया। इन्हें विज्ञान से सम्बन्धित छात्रवृत्ति दी गई। अणुशक्ति संबंधी कार्यों में विशेष रुचि होने के कारण इन्होंने "इस्टीट्यूट ऑफ न्यूक्लिअर फिजिक्स" की स्थापना करवाई।

इंग्लैण्ड में शोध कार्य के लिए गए वहाँ से लौटने पर एक बार पुन: प्रयाग आकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय को कर्मक्षेत्र बनाया। डॉ. साहा भारत वर्ष की ओर से अनेक वैज्ञानिक गोष्ठियों व सम्मेलनों में प्रतिनिधि बनकर जाते रहे।

डॉ. साहा एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक एवं भौतिक वक्ता के रूप में याद किए जाते रहेंगे। 16 फरवरी, 1956 को इस प्रतिभाशाली वैज्ञानिक ने हम सबसे विदा ले ली।

-ग्वालियर (म.प्र.)

क्रांति-जीवन

कहानी

रामकरण

फागूलाल 'हो-हो' कर हँस रहे थे। जितना वे हँस रहे थे मुरली को उन पर गुस्सा आ रहा था। दादी जी सही कहती हैं- 'दादा को दया-माया नहीं लगती। उनके अंदर सब सूख गया है केवल खून को छोड़कर।' दादी ने दौड़कर मुरली को उठाया तो वह भर्रा पड़ा। फागूलाल ने कहा, "देखा, सहारा देने पर ऐसा ही होता है। यह कभी मजबूत नहीं होगा।" मुरली मुँह बिचकाकर रोने लगा। दादी ने कहा, "अभी बच्चा है। जब आपकी तरह बूढ़ा हो जाएगा, तब यह भी नहीं रोयेगा।" फागूलाल और जोर से हँस पड़े, "मुझे तो यह अभी से बूढा लगता है।" फागूलाल और उनकी पत्नी, यानी मुरली के दादा और दादी के बीच ऐसी नोक-झोंक रोज होती है। फागूलाल मुरली को मजबूत बनाने पर जोर देते, दादी कहती समय से सब होता है। शीघ्रता करने से नहीं होता। मुरली को अभी प्यार-दुलार की आवश्यकता है। दादा, यानी फागूलाल कहते, "प्यार-दुलार करो लेकिन इतना नहीं कि यह बिगड़ जाए। गिरे-पड़े तो उठाया मत करो। खुद उसे उठने दो।" लेकिन मुरली खेल-कूद में कभी गिरता तो आश्रय खोजता। दादी दौड़ पड़ती। यह बात फागूलाल को बिल्कुल प्रिय नहीं।

दादा जी चाहे जितना कठोर हो पर कहानियाँ वही रोचक सुनाते थे। दादी के पास उतनी कहानियाँ नहीं। हाँ, दादी में कोमलता ज्यादा था। दादा कहते, "मेरा प्यार समझने के लिए तुम्हे और परिपक्व होना होगा।" यह बात मुरली के समझ में नहीं आती। लेकिन कहानी सुनने के लिए "हुँकारा" भरना उसे आता है।

शाम को जब मुरली सोने गया तो पूछा, "दादाजी! क्या आप कभी नहीं रोये?" फागूलाल फिर से हँस पड़े, "रोता कौन नहीं है?" यह बात तो मुरली के समझ से परे है। एक तरफ कहते हैं, रोना नहीं है, दूसरी तरफ यह भी कहते हैं- "रोता कौन नहीं।" मुरली कहता, "आप जब छोटे थे तब रोते थे या नहीं? बताइये।" "ये क्या रोना-धोना लेकर बैठ गया। दिन में रोयेगा और रात में रोने वाली कहानी सुनेगा" फागूलाल बोले।

मुरली अड़ गया, "नहीं नहीं, बताइये।" फागूलाल ने

कहा, "बताऊँगा, लेकिन रोने वाली नहीं। पहले हँसने वाली। पर जैसे ही हुँकारे की आवाज आना बंद होगा, कहानी बन्द हो जाएगी।" मुरली बोला, "नहीं, अपनी वाली सुनाइये।" फागूलाल बोले, हूँ। अपनी ही सुनाता हूँ।"

मुरली बोलना आरंभ किया "हूँ।"

"तो उस समय की बात है जब मैं किशोर था। मूँछ दाढ़ी आ गई थी। मूँछ पर रोज घी लगाता। उसे ऐंठकर ऊपर घूमा कर रखता। पहलवानी करता। दंगल लड़ने जाता। घर के काम काज में मन नहीं लगता। पिताजी, बहुत डाँट लगाते। रोज अच्छी बात बताते। कहते कि काम धाम में मन लगाओ। लेकिन मेरा मन घूमने में लगा रहता। तभी एक बार उनका कोलकाता जाना हुआ। उस समय कोलकाता का बड़ा नाम था। एक दिन 'विक्टोरिया मेमोरियल' देखने निकले। टिकट लिया और मूँछ को ताव देते हुए अन्दर घुसा। एक अंग्रेज अधिकारी तपाक से सामने आकर खड़ा हो गया। बोला- "अंदर नहीं जा सकते।"

"मैंने टिकट लिया है," उसे टिकट दिखाया। वह बोला "उससे क्या होता है। मैं जो कहता हूँ वह करोगे तभी अंदर जाओगे।"

"क्या करना होगा?"

"अपनी मूँछ मुड़वा दो।"

मुँह तो गुस्से से लाल हो गया। आँखों से चिंगारी निकलने लगी। पर देश अंग्रेजों का गुलाम था- ऊपर से परदेश में। इसलिए गुस्से को पीकर बोला- "इसके अलावा कोई शर्त?"

वह बोला- "एक काम करो- बहुत छोटा सा। मूँछें

नीची कर लो और जाओ।"

मैंने कहा, "यह भी नहीं। और कोई शर्त बताइये।"

अंग्रेज ने कहा, "तो पच्चीस टका जमा करो और अंदर जाओ।"

मैने जेब से पच्चीस टका निकाले और जमा करवा दिये।

मुरली टोका, "उस जमाने में पच्चीस टके में क्या मिलता था?"

"पच्चीस टका मतलब आज के कई हजार रुपये।"

"तब तो उतने से एक गाड़ी भरकर चॉकलेट-टॉफियाँ आ जाती।"

"तुम्हें तो चॉकलेट की ही चिंता रहती है। सुनो...।"

"लेकिन दादा जी!" मुरली को कुछ याद आया।

"क्या?"

"कोलकाता तो अपने गाँव से बहुत दूर था न?"

"हाँ।"

"आप अकेले भी थे।"

"बिल्कुल। लेकिन उससे क्या?"

"मैं सोच रहा हूँ, वह कुछ सोचते हुए बोला, "आपको मूँछें नीची कर लेना चाहिए थी।"

फागूलाल ने आँख मटकाई, "क्यों...क्यों?"

मुरली बोला, "एक तो पैसे बच जाते। दूसरे आप अपने गाँव से दूर थे। किसी को पता भी नहीं चलता कोई गाँव वाला तो था नहीं।"

"नहीं मुरली। मैंने जो किया था, वह गाँव वालों के लिए नहीं था। अपने लिए था। पैसे जेब में रहते हुए अगर मूँछें नीची करता तो अपने आप को भी मुँह नहीं दिखा पाता। यह बात तुम बाद में समझ पाओगे।"

"मतलब कि अगर पैसे आपके पास न होते तो मूँछें नीची कर लेते?" मुरली ने फिर प्रश्न किया।

"चुप करो। तब भी नहीं करता।"

"तब?"

"तब वापस चला जाता। भला अपने स्वाभिमान के प्रतीक को कोई झुकाना चाहेगा?"

"लेकिन कुछ लोग तो मूँछ रखते ही नहीं।"

"नहीं रखते, यह अच्छी इच्छा है। इसमें कोई बुराई नहीं। परन्तु कोई रखा हो और कोई उसे नीचे करने को कहे, यह अपमान है। उस समय यह आन-बान का प्रतीक हो जाता है। जैसे हम गाते हैं, "झंडा ऊँचा रहे हमारा।" झंडा तो एक कपड़ा ही है। किन्तु जब कपड़ा झंडा बनता है तो हमारी शान बन जाता है।"

"हूँ...।" उसने हुँकार भरी।

" ये मैंने अपने लिए किया था। अपनी आत्मा के लिए। पहले मैं खूब कमाना, अच्छा खाना और अच्छा पहनना चाहता था। किन्तु इस घटना के बाद मुझे अनुभव हुआ कि हमारा देश पराधीन है। अगर हम स्वतंत्र होते तो कोई हमसे ऐसा नहीं कहता।"

दादाजी एक क्षण रुके। फिर कहने लगे-

"तो मुरली, यह सत्य है कि आग लगाने के लिए आग कि नहीं, एक चिंगारी की आवश्यकता होती है। इस घटना ने चिंगारी का काम किया और मेरे अंदर देशभक्ति की आग जल गई। मैं वापस घर आया।लेकिन मुझे तो धुन लगी थी, "वन्दे मातरम्" की क्रांति की। एक दिन मेरी भेंट एक क्रांतिकारी राहुल बोस से हुई। वह चंद्रशेखर आजाद और भगतसिंह के संपर्क में थे।"

मुरली चिहुंक पड़ा, "तो आप आजाद और भगत जी से मिले थे?"

"सब बताता हूँ।" वे कहने लगे।

राहुल बोस का ही विश्वास जीतने में मुझे बहुत दिन लग गए। जब उन्हें यह भरोसा हो गया कि मुझमें बातें गुप्त रखने की क्षमता है और देश सेवा की ललक तब मुझे पता चलने दिया कि वे एक क्रांतिकारी थे। एक बार उन्होंने बताया कि वे आजाद के सम्पर्क में है। इसके बाद उनके निर्देश मुझे मिलने लगे। पहले तो लोगों को जागरुक करने का कार्य। फिर लोगों में राष्ट्रीयता और भाईचारा विकसित करने वाले काम करने पड़े। सभा समितियों में भी आना-जाना हो गया। लेकिन पुलिस भी तब मुझ पर नजर रखने लगी। एक रात घर पर छापा पड़ा। पुलिस मुझे थाने ले गई। पूछताछ के बाद छोड़ दिया। इस घटना के बाद मैं और सक्रिय हो गया। क्रांतिकारियों एवं राष्ट्रवादियों से मेरी भेंट होने लगी। आजाद जी से तो केवल एक बार ही मिल सका- सरयू के जंगल में। उन्होंने मेरी पीठ ठोंक कर आशीर्वाद दिया, मातृभूमि की सेवा करते रहो और कभी मिलने का प्रयास नहीं करना।"

"ऐसा क्यों दादाजी?"

"इसलिए कि पुलिस को क्रांतिकारियों की तलाश रहती थी। वे नहीं चाहते थे कि क्रांतिकारी एक जगह पर इकट्ठे हों और पुलिस के हाथ लगें।"

"अच्छा।"

एक दिन उन्हें आदेश मिला कि अंग्रेज सरकार सेना की पहुँच दूर-दूर तक बनाने के लिए रेल लाइन बिछवा रही है। उसे रोकना होगा। सेना क्रांतिकारियों एवं स्वतंत्रता सेनानियों का दमन कर रही थी। उनका उद्देश्य विकास नहीं, भारतीयों का दमन था।

फिर वे पटरियाँ उखाड़ दी गई। तब तो पुलिस हाथ धोकर मेरे पीछे ही पड़ गई। कई जगहों पर छापेमारी हुई। कई साथी गिरफ्तार हुए। बहुत यातनाएँ दी। इन यातनाओं ने हमें और कठोर बना दिया। हम तो एक अभियान के लिए, ध्येय के लिए काम कर रहे थे और हमें वही देख रहा था और कुछ अनुभव भी नहीं हो रहा था।

दादी ने कहा, "रात बहुत हो गई है। सो जाओ।"

दादाजी ने पूछा, "मुरली 'सुनना है या समाप्त करूँ' कहानी।"

"सुनना है, दादाजी।"

" तो एक दिन जब हम अपने साथियों के साथ जंगल में रात गुजारने युक्ति सोच रहे थे, तभी पुलिस ने हमें हमें घेर लिया। हम गिरफ्तार हो गये।" दादाजी ने एक लंबी सांस ली। फिर बोले- "ये जो अमहट का पुल है।" एक क्षण रुके फिर कहने लगे, "इसी के बगल जेल में हमें रखा गया था। आगे यातनाओं का एक दौर चला। अंग्रेज सिपाही नए-नए तरह से परेशान करते थे।"

"ओह!" मुरली ने दादाजी को पकड़ लिया।

"एक रात तो उन्होंने हद कर दी। ठंड की रात थी। शायद अगहन य पूस का महीना था। सभी क्रांतिकारियों को आधी रात में जगाया गया। उन्हें अमहट घाट पर ले गए। जबरन नहलाया और फिर।" और वे चुप हो गए। उन्होंने छत को घूरा। मुरली उनका पीठ सहलाने लगा। वे बोले, "आततायों ने सभी पर कोड़े बरसाए। सुबह कइयों की तबियत बिगड़ गई। हमारे साथी द्वारका को निमोनिया हो गया। इलाज की उचित व्यवस्था न होने से बच नहीं पाए।" दादाजी के आँसू मुरली के हाथों पर टप-टप गिर गये।

"अखबार में खबर आई?"

नहीं अखबार वाले बड़े-बड़े शहर तक सीमित थे। अंग्रेजों की मनमानी चलती रही। एक दिन हमें पूछताछ के लिए एक कमरे में बुलाया गया। लेकिन पूछताछ करने वाले व्यक्ति को देखकर मैं चौंक गया। मुझे तो चक्कर आने लगे। वह पुलिस वाला राहुल बोस था।"

"तो क्या वे अंग्रेज से मिले थे?"

"बताता हूँ। बहुत कड़ाई से पूछताछ हुई। उनके अंदर तनिक भी कोमलता नहीं थी। बल्ब जलाकर उसे क्रांतिकारियों के चेहरे के पास लगा दिया गया। वे प्रतिज्ञा करके आये थे कि वे क्रांतिकारियों के ठिकानों और गतिविधियों का राज उगलवा कर रहेंगे। हमें उनके बारे में जानकर बड़ी निराशा हुई। ऐसे व्यक्ति से घृणा हो गई।"

"क्या कहा था उन्होंने?"

"उन्होंने कहा, "आज रात निकल लो।" उन्होंने कुछ संकेत दिया कि हम जेल तोड़ कर भाग सकते हैं।

उस रात हम जेल से निकल गए। बाद में हमें पता चला कि राहुल बोस पुलिस में रहकर ही क्रांतिकारियों की मदद करते थे। वे ऐसा व्यवहार करते थे कि किसी को उन पर संदेह न हो।

एक दिन ज्ञात हुआ कि पुलिस ने आजाद को घेर लिया और...।

इसके बाद हमें पुलिस नहीं पकड़ सकी। जंगल ही हमारा घर-बार था। हम कभी-कभी महीनों तक बीच जंगल में रहते। दुनिया में क्या हो रहा है मालूम ही नहीं हो पाता। एक दिन हम एक गाँव में गये। वहाँ लड्डू बँट रहे थे और वन्देमातरम का नारा लग रहा था। पहले तो हमने लड्डू लेने से मना कर दिया। लेकिन जब पता चला कि ये तो भारत की स्वतंत्रता का उत्सव मनाया जा रहा है तो हम भी उसमें सम्मिलित हो गये। हमारी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था।"

दादाजी और मुरली थोड़ी देर शांत थे। मुरली ने कहा, "अब तो देश स्वतंत्र है। आपको प्रसन्नता होती होगी।"

दादाजी ने फिर एक लंबी सांस ली, "हाँ, स्वतंत्र तो है। पर किसी को इसका मूल्य पता नहीं है। पहले परायों से लड़ते थे, अब लोग आपस में लड़ाई झगड़े में उलझे हैं। इन्हीं आपसी लड़ाइयों के कारण देश गुलाम हुआ था।"

दादी दोबारा जाग गई थी। उन्होंने डाँटते हुए कहा, "रात बहुत हो गई है। अब सो जाओ। मुरली आओ...।"

मुरली दादाजी की ओर सरक गया। उनका हाथ पकड़ कर सोने का प्रयास करने लगा। दादी चकित थी कि मुरली को क्या हो गया? दादाजी ने कौन सी घुट्टी पिला दी कि आज मुरली को दादी की आवश्यकता नहीं पड़ रही है। उन्हें नींद नहीं आ रही थी।

-मिश्रोलिया (उ.प्र.)

सबसे बड़ा झूठ
चित्रकथा-
मुहल्ले के कई बच्चों ने एक पिल्ले को घेर रखा था. यह देख रामशरण को जिज्ञासा हुई-
क्या कर रहे हो बच्चों?
काका, हम सबने तय किया है कि जो सबसे बड़ा झूठ बोलेगा यह पिल्ला उसी का हो जाएगा..
ओह! बड़ी शर्म की बात है..
हम तुम्हारी उम्र के थे तब हमें यही पता नहीं था कि झूठ होता क्या है?
ठीक है, ठीक है.. यह पिल्ला आपका हो गया काका ...

(राष्ट्रीय डाक दिवस : १० अक्टूबर)

डाकघर से अजायब-घर के रास्ते में...

एकांकी

तपेश भौमिक

पात्र परिचय

पोस्टकार्ड- एक दस बारह वर्ष का बालक, जो 'पोस्टकार्ड' के रंग का पोशाक पहना हुआ और गले में बड़ा सा पोस्टकार्ड का प्रतीक टाँगे हुए।

लेटर बॉक्स- एक तेरह-चौदह वर्ष का बालक, गले से घुटने तक लाल रंग का जंग लगा हुआ (लेटर बॉक्स) पत्र पेटी के आकार का डब्बा बना हुआ।

अंतर्देशीय पत्र - एक बारह तेरह वर्ष का बालक उसी पात्र के रंग ढंग में, छाती पर पत्र का प्रतीक चिपकाए।

लिफाफा - लिफाफे के रूपरंग का कुर्ता पहने हुए।

डाकिया - एक तेरह-चौदह वर्ष का किशोर डाकिए के वेश में।

बूढ़े बाबा- लाठी टेकते हुए एक बूढ़ा आदमी, जो शरीर से भी कमजोर दिख रहा है।

डाक टिकटें- कुछ आठ दस वर्ष की चुलबुली लड़कियाँ, छाती पर डाक टिकटों की प्रतीक चिपकाए।

कवयित्री दीदी- एक पंद्रह सोलह वर्ष की नेता जैसी की दिखने वाली लड़की।

मंच सज्जा - सड़क के पास एक पेड़ के तने से टंगा हुआ लेटर बॉक्स। बीच-बीच में सड़क पर आते-जाते हुए राहगीर जो एक बार जरूर लेटर बॉक्स और दूसरों की बातचीत को आश्चर्य भरी दृष्टि से देखकर दर्शकों की ओर कुछ समझाना चाहते हैं, ऐसा भाव प्रकट करते हुए आगे बढ़ जाते हैं।

(पोस्ट कार्ड का प्रवेश, पेड़ के तने के साथ जंग लगे और मौसम की मार खाए लेटर बॉक्स को देखकर ठिठक जाता है।)

पोस्ट कार्ड -(हाथ जोड़कर) लेटर बॉक्स भैया, नमस्ते! आपकी यह दुर्दशा।

लेटर बॉक्स- वाह भाई! तुम पोस्ट कार्ड हो न? अब मैं सड़क समाधि लेने के दिन गिन रहा हूँ बड़े दिनों के बाद तुमने मेरी सुध ली है। जीते रहो।

पोस्ट कार्ड - जीना-मरना तो जनता जनार्दन के हाथ! अब तो डाकखाने में पड़ा-पड़ा बीते दिनों की याद में दुखी होता हूँ। आप थे हमारे लिए धर्मशाला। लोग अपना संदेश लिखकर बड़े आराम से आपके मुँह के रास्ते हमें डाल जाते थे कि हम अवश्य उनके लिखे पते पर पहुँच जाएंगे।

लेटर बॉक्स - हाँ भाई! हाँ, तुमने ठीक कहा है। मेरे दरवाजे पर ताला लगा कर डाकिया कब को जा चुका है, पता नहीं कभी आयेगा भी या नहीं।

पोस्ट कार्ड - मैं आपके अंधेरे बंद कमरे में अपने सहयात्री साथियों से कितने ही गपशप करता था। फिर डाकिया भैया आकर हमें अपने थैले में समेटकर ले जाते थे, हमारी धड़कनें तेज हो जाती थी तब।

लेटर बॉक्स - डाकिया भैया से भेंट नहीं हुई, बहुत दिन हो गए। मैं इस पेड़ के तने से टंगा हुआ उसके आने की उम्मीद भी छोड़ चुका हूँ। मौसम के थपेड़ों ने मेरी क्या हालत बना दी है, देखो न।

पोस्ट कार्ड - हब तो हम नहीं जाते तो तुम्हारी कोई पूछ भी नहीं होती, तुम्हारी हालत तो उस स्टेशन की तरह है जहाँ से होकर गाड़ियाँ आती-जाती न हो या रुकती न हो।

लेटर बॉक्स - हाँ, वे सब तो केवल यादें ही हैं। तुम सब एकदम मौन ही रहते या कुछ गुप-चुप बातें करते थे, कोई दूसरा आ टपकता तो थोड़ी सी खलबली होती वह भी तुम सब से घुलमिल कर बातचीत करता रहता। मैं केवल तुम सब की बातों को चुपचाप सुनता रहता।

पोस्ट कार्ड - हम संचार के सबसे सस्ते माध्यम हुआ करते थे। कितने ही लोग हम पर अपना संदेश लिखकर पीठ पर पता लिख देते और आपके मुँह में डाल जाते थे, और हम देर सबेर सही डाकिया आकर आपको खोलता तो हमारी हड़बड़ी उन यात्रियों की तरह न होती थी जो अक्सर रेलगाड़ी पकड़ने के लिए किया करते हैं।

लेटर बॉक्स - हाँ भाई! हाँ, और मैं फिर से पत्र भेजने वालों की राह ताकता रहता था कि कोई आकर मेरी मुँह में अपना पत्र डाले। मैं तो उस धर्मशाला की तरह था जहाँ कितने ही लोग अपने गंतव्य तक पहुँचने के लिए आकर रुकते हैं। मैं सबको हृदय से स्वागत करता और प्रार्थना करता कि सबकी यात्रा मंगलमय हो। (ठंडी आहें भरकर) अब तो कुछ बच्चे नटखटपन करके मेरे दरवाजे का ताला तोड़कर अंदर में ईंट पत्थर भर दिए हैं।

(एक बूढ़े बाबा का हाथ में लिफाफा लिए इधर-उधर झाँकता हुआ प्रवेश।)

लेटर बॉक्स- आइए बाबाजी! पहले तो हर सप्ताह आते थे, आप मुझमें चिट्ठी डाल कर इसी पेड़ के नीचे

थोड़ा सुस्ता लेते थे तब लौटते थे। अब आपका काम कैसे चलता है?

बूढ़े बाबा- भई, पूछो मत दु:ख की बात। मैं ठहरा चलने-फिरने से लाचार बूढ़ा आदमी, किसी तरह लाठी टेक कर चलता हूँ, घर के पास ही यह लेटर बॉक्स था, एक पोस्ट कार्ड लिखकर हर सप्ताह डाल दिया करता था फिर संतुष्टि हो जाती कि देर सबेरे बेटे के पास चिट्ठी पहुँच ही जाएगी।

पोस्ट कार्ड - बाबा, आपका बेटा देश की सीमा पर तैनात है क्या?

बूढे बाबा- हाँ भई हाँ, कभी-कभी फोन आना भी बंद हो जाता है, तब बहुत चिंता होती है। ऐसे में चिट्ठी ही एकमात्र सहारा रह जाता है।

पोस्टकार्ड - बाबा, आप लिफाफा हाथ में लिए कहाँ जा रहे हैं?

बूढ़े बाबा - मत पूछो भैया पोस्टकार्ड! अब इस कस्बे के कोरियर वाले के यहाँ पत्र लेकर जाना पड़ता है। वह भी अपनी मर्जी का मालिक है, कभी रहता है तो कभी नहीं! बेटा कहाँ रहता है इसका ठीक पता नहीं चलता। कोरियर वाला यह कह कर पैसा ज्यादा ऐंठ लेता है कि आपका बेटा कहाँ है इसका पता लगा कर चिट्ठी ले जाना पड़ता है।

पोस्टकार्ड - हम थे सस्ते में संदेश पहुँचाने वाले, कहीं भी रहे पत्र पाने वाला! हम तो देर-सवेर पहुँच ही जाते थे।

बूढ़े बाबा - क्या जमाना चला आया है। बदलाव का स्वागत हर कोई करेगा, लेकिन आम जनता को सुविधा हो, इसका तो ख्याल रखना ही चाहिए। पोस्टकार्ड की कीमत बढ़ा कर दो रुपया कर देता, कोई बात नहीं। तुम्हें तो सस्ते में बिदा कर दिया।

लेटर बॉक्स - अब मेरी हालत देखो बाबा, मैं था अमीर गरीब सबकी सेवा के लिए तत्पर सीमा पर पहरेदारी करने वाले सिपाही की तरह। अब तो मैं सड़क समाधि लेने वाला हूँ।

(कवयित्री दीदी का प्रवेश, आँखों में चश्मा लगाए, कंधे से शांति निकेतनी झोला लटकाएँ, हाथ में कलाम और नोट बुक लिए हुए।)

कवयित्री दीदी - आप सब यहाँ किस बात की चर्चा कर रहें हैं?

सब एक साथ -स्वागत है, हम सब अपने बीते दिनों की चर्चा कर रहे हैं।

कवयित्री दीदी - धन्यवाद, आप सबके मुखडे पर उदासी छाई हुई है?

पोस्टकार्ड - जी हाँ दीदी! आपने हमारे चेहरों को खूब पढ़ ली है। मुझे लोग पोस्टकार्ड कहते हैं, ये ठहरे हमारे लेटर बॉक्स महोदय और ये हैं बूढ़े बाबा, जो पहले मुझ पर लिखते और इनके मुँह पर डालते, फिर हम यात्रा के लिए निकल पड़ते। अब सरकार ने मेरी कीमत नहीं बढ़ाई और यह कहकर बाहर का रास्ता दिखा दिया कि हम अब लोगों को पसंद नहीं। अब अजायब-घर को जाने ही वाला हूँ, वहीं हमारा वृद्धाश्रम है।

कवयित्री दीदी - मैं समझ गई कि माजरा क्या है?

(इतने में कई डाक टिकटों यानी कई चुलबुली लड़कियों का प्रवेश।)

सभी डाक-टिकट एक साथ- आप सब यहाँ किस बात का रोना रो रहे हो।

पोस्टकार्ड - हम यहाँ अपनी किस्मत का रोना रो रहे हैं, तुम लोगों को तो सब कुछ पता है हमारे बारे में, अपने में ही खोई रहती हो क्या?

(इतने में अन्तर्देशीय पत्र कार्ड और लिफाफे का एक साथ प्रवेश)

अंतर्देशीय कार्ड -(डाक टिकटों की ओर अंगुली दिखाकर) इनको क्या! ये तो चुलबुली लड़कियों सी हैं।

बड़ा डाक टिकट - हम तो है रंग-बिरंगी तितलियों सी। जहाँ जिसकी कीमत बढ़नी हो उसके चेहरे पर चिपक जाती हूँ... और उसकी कीमत बढ़ जाती है। साथ ही उसकी सुंदरता में चाद चाँद लग जाते हैं।

अंतर्देशीय कार्ड- (जो अब तक चुप था, अब यकायक बरस पड़ता है।)

क्यों नहीं! तुम सब को कोई अलग अस्तित्व है भी या नहीं? तुम्हें तो केवल हमारी पीठ पर चिपक कर सवार होना आता है। फिर सैर करती रहो, और क्या? जब तुम सब के चेहरों पर कालिख लगा ठप्पा जड़ देता है तब तो सारी सुंदरता भाग जाती है।

छोटा टिकट- अरे ठप्पा तो तुम सब पर भी लगता है।

पोस्ट कार्ड - छोटा बम, और बड़ा धमाका। कहाँ हो मेरे आका? आई हैं, बड़ी नाकवालियाँ। हम पर जब ठप्पा

लगता है वह तो हमारे लिए शान की बात होती है, वो तो हमारे लिए सिपाही का बिल्ला है।

मझला टिकट - तुम सब के सब तो अजायब घर जाने वाले हो। हम तो अब भी डाक खाने की पहचान बनाए हुए हैं, फिलटेल क्लब के सदस्य आकर हमें खरीद कर ले जाते हैं, और अपने एलबम में चिपका कर बड़े यत्न से रखते हैं, कभी-कभी प्रदर्शनियों में हम जब जाती हैं, तो मानो समा बंध जाता है।

कवयित्री दीदी - मैं डाक विभाग की इस लापरवाही से भली-भांति परिचित हूँ। आपके रख-रखाव में कोई ध्यान ही नहीं दिया है। मैं इस विषय पर 'संचार मंत्रालय' को लिखूँगी, साथ ही दैनिक पत्रिकाओं के 'जनमत स्तंभ' में भी लिखूँगी, ताकि नींद में सोई जनता जागे और मुझे उनका समर्थन मिले।

लिफाफा- भाइयो, बहनो! यों ही आपस में झगड़ा करना बेकार है, चलो हम सब एक साथ होकर कवयित्री दीदी का साथ देते हैं, इससे सबका विकास होगा। आज या कल सबको हो सकता है कि ऐसे दिन देखना पड़े। कम्प्यूटरीकृत रजिस्ट्री आदि में आजकल टिकट के बदले कोडिंग वाली स्टिकर को ही चिपका दिया जाता है।

अत: टिकट सुंदरियों! आपके भी बुरे के दिन आने वाले हैं। एक मैं ही हूँ जो आज भी उपयोग में हूँ पर अमर नहीं हूँ।

कवयित्री दीदी - मैंने आप सब की पीड़ा भरी कहानी सुन ली है, मैं डाक खाने की इस दुर्दशा के लिए आगे बढ़ते समय और सरकारी तंत्र के ढुलमुल रवैये को दोषी ठहराता हूँ। सरकार चाहती तो पोस्टकार्ड को शुभकामना पत्र की शक्ल दे सकती थी। डाक व्यवस्था को और कुछ चुस्त-दुरुस्त बनाने के प्रयास कर सकती है। आज से हमारा अभियान 'डाक नवजागरण'।

सब एक साथ - कवयित्री दीदी की जय हो। हम तुम्हारे साथ हैं। संघर्ष हमारा नारा है, आगे भोर का उजियारा है।।

- गुड़ियाहाटी (पश्चिम बंगाल)

उलझ गए!

• देवांशु वत्स

राशि ने रोहित के बारे में सोनम से कहा– 'वह मेरे ताऊ जी के भांजे के पिताजी की सास के बेटे के भांजे का भाई है।' राशि और रोहित का आपस में क्या रिश्ता है।

(उत्तर इसी अंक में)

देशों के समूह और उपनाम

आलेख

श्रीधर बर्वे

जब किसी देश से सम्बन्धित कोई समाचार आता है तो आरम्भ में उसका प्रचलित नाम दिया जाता है किन्तु जब घटना या समाचार के कारण उस देश का कई बार उल्लेख करना होता है तो उससे जुड़े हुए सामूहिक नाम या नामों का प्रयोग भी किया जाता है। सामूहिक नाम के उपयोग करने से कुछ लाभ होते हैं। पहला तो यह कि एक ही नाम की पुनरावृत्ति से बच जाते हैं। दूसरा यह कि सम्बन्धित देश की भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि एवं उससे जुड़े संगठन-गठबंधनों की जानकारी भी मिल जाती है।

हमारा देश एशिया महाद्वीप के दक्षिण में स्थित है। पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, मालदीव, श्रीलंका और अफगानिस्तान इसी क्षेत्र के देश है जो भारत के पड़ोसी भी है। इस देशों को 'दक्षिण एशिया अथवा भारत उपमहाद्वीप' कह कर भी पहचानते हैं। भूगोल ने इस देशों को जोड़ा है, इतिहास और संस्कृति की भी अनेक धाराओं ने इन सब देशों को समान रूप से प्रभावित किया है।

१९८५ में इन देशों का एक संगठन सार्क SOUTH ASIAN ASSOCIATION FOR REGIONAL COOPERPORATION अस्तित्व में आया। इस संगठन के आरम्भ में सात सदस्य देश थे, आठवां सदस्य दो वर्ष पूर्व अफगानिस्तान बना। 'सार्क' देशों का मुख्यालय काठमाण्डू (नेपाल) में है।

दक्षिण पूर्वी एशियायी देश इण्डोनेसिया, मलेयेसिया, ब्रूनाई, सिंगापुर, थाईलैण्ड, कम्बोडिया, लाओस, वियतनाम, म्यामार और फिलिपीन्स भी हमारे पड़ोसी देश हैं। इन देशों को प्राय: दिशा का नाम लेकर दक्षिण पूर्व एशियाई देश कहते हैं। इन्हें आसियान देशों के नाम से भी उल्लेखित करते हैं। 'आसियान' इन देशों का क्षेत्रीय संगठन है, जो संगठन के पूरे नाम के पहले अक्षरों को मिलाकर बनाया गया है 'ASSOCIATION OF SOUTH EAST ASIAN NATIONS' आसियान का मुख्यालय जकर्त्ता (इण्डोनेसिया) में है। आसियान देशों के कुछ देशों के अलग से भी कुछ समूह नाम हैं। 'इन्डोचायना' नाम है- थाईलैण्ड, कम्बोडिया, लाओस और वियतनाम का। यह एक भौगोलिक नाम है क्योंकि जहाँ भारत और चीन की संस्कृतियों का एशिया के इस कोने तक प्रभाव हुआ था। यह क्षेत्र भारत के पूर्व और चीन दक्षिण में है। आसियान का ही सबसे छोटा देश (क्षेत्रानुसार) सिंगापुर है जिसे छोटा चीन अथवा तीसरा चीन भी कहते हैं क्योंकि सिंगापुर की आबादी का ७६ प्रतिशत चीनी वंशजों का है। मलेसिया, ब्रूनाई, इण्डोनेसिया को समूह रूप से मलय देश के नाम से पहचाना जाता है।

एशिया एक विशाल महाद्वीप है, इसलिए विभिन्न भौगोलिक तथा सांस्कृतिक समूह नाम प्रचलित हैं। चीन, कोरिया, जापान और ताइवान को सुदूर पूर्व FAR EAST देश कहा जाता है। यह नाम प्राय: अमेरिका और योरोप के लोग प्रयोग करते हैं क्योंकि उनके यहाँ से ये देश पूर्व दिशा में सबसे दूर हैं। इनमें भी जापान का उप सम्बोधन 'सूर्योदय का देश' तथा कोरिया का अन्य सम्बोधन है 'प्रात:कालीन शान्ति का देश'।

एशिया के मध्य में गोबी का मरुस्थल है, इस मरुस्थल का देश है 'मंगोलिया' जो उत्तर में रूसी संघ तथा दक्षिण में चीन का घिरा हुआ है।

मध्य एशिया में अनेक देश स्थित हैं। मंगोलिया के पश्चिम और कैस्पियन सागर के मध्य K2-u-t2 कजाखस्तान, किरगिजस्तान, उज्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान और तुर्कमानिस्तान देश स्थित है। कैस्पियनसागर का तट मध्य एशिया के ही जार्जिया तथा अजरबैजान के साथ कजाखस्तान और तुर्कमेनिस्तान का भी साझा तट है। इस कारण इन्हें कैस्पियन देश भी कहा जाता है। सोवितय संघ के विघटन (1991) के पहले ये सभी देश उसके सदस्य थे। अब इन देशों का एक नया संगठन है COMMON WEALTH OF INDEPENDENT STATES (CIS) स्वतंत्र देशों का राष्ट्रमंडल। इस का मुख्यालय मिंस्क बेलारुस में है।

ईरान के पश्चिम में लगाकर भूमध्यसागर तक और अरब सागर के उत्तर में पश्चिम एशिया के अरब देश स्थित हैं। ये देश है- इराक, जोर्डन, कुवैत, सीरीया, लेबनान, सऊदी अरब,

ओमान, कतर, बेहरीन, संयुक्त अरब अमीरात और यमन। अरब देश अफ्रीका में भी है- मिस्र (ईजिप्ट) लिबिया, ट्यूपीसिया, अल्जीरिया, मोरक्को, मौरीटेनिया, जिबूटी, सोमालिया और सूडान। एशिया और अफ्रीका के समस्त अरब देशों का एक संगठन "अरब लीग" है जिसका मुख्यालय है- काहिरा (मिस्र) में। अरब लीग में हिन्द महासागर का एक द्वीप देश कोमोरा भी सम्मिलित है।

अरब सागर की एक भुजा अरब प्रायद्वीप और ईरान के बीच 'फारस की खाड़ी' के नाम से विख्यात है। इस खाड़ी में स्थित एक नन्हा सा द्वीप राज्य बेहरीन है। जिसे 'मोतियों' के द्वीप के उपनाम से पहचाना जाता है। फारस की खाड़ी के अरब देशों- साऊदी, कतर, ओमान, कुवैत, यू.ए.ई. और बहरनी का एक आर्थिक संगठन GULF COOPERATION COUNIL (G.C.C.) खाड़ी सहयोग परिषद भी है जिसका मुख्यालय सऊदी अरब की राजधानी रियाद में है।

पश्चिम एशिया के अरब देशों मिस्र, इजराइल और तुर्की को मिलाकर 'मध्यपूर्व' भी कहा जाता है। अफ्रीकी अरब देशों के दक्षिणी भाग में विश्व का विशाल मरुस्थल 'सहारा' फैला हुआ है। सहारा के दक्षिण में अटलांटिक महासागर से लगाकर सूडान तक फैला हुआ क्षेत्र 'साहेल' कहलाता है इस क्षेत्र के देश हैं- सेनेगल, माली, नाइजर, चाड और बुरकिना-फासो। साहेल देशों में पेड़ों की कटाई के कारण सहारा का विस्तार होता जा रहा है।

साहेल के दक्षिण में स्थित अफ्रीकी देशों की दक्षिणी सीमा अटलांटिक महासागर पर है। इस क्षेत्र का एक भाग गिनी तट कहलाता है। गिनी तट 'गोरे (योरोपीय) लोगों की कब्रगाह' के नाम से कुख्यात है क्योंकि जब योरोपीय खोजकर्ता इस क्षेत्र में आये तो आरम्भिक वर्षों के प्रतिकूल जलवायु के कारण गोरे लोग बड़ी संख्या में मर गये थे। गिनी तट पर 'गिनी' नाम लिए हुए तीन स्वतंत्र देश स्थित है जिन्हें उनकी राजधानी के नाम को जोड़कर पहचाना जाता है। इनमें से एक है 'गिनी कोनक्री' जो फ्रांस से मुक्त हुआ, दूसरा है 'गिनी बिसाऊ' जो पुर्तगाल की पराधीनता से आजाद हुआ और तीसरा है 'इक्वेटोरियल गिनी' जिसकी राजधानी 'मलाबो' है। यह देश स्पेन के अधिकार में था। भूमध्य रेखा के समीप स्थित होने से इस के नाम के साथ इक्वेटोरियल विशेषण जुड़ा हुआ है।

जो देश दक्षिण अफ्रीका के नाम से प्रसिद्ध है वास्तव में वह है 'रिपब्लिक आफ साउथ अफ्रीका' (दक्षिण अफ्रीका गणराज्य) यह देश अपनी राजधानी के विकेन्द्रीकरण के लिए दुनिया में अनूठा है। इसकी प्रशासनिक राजधानी प्रिटोरिया में है, विधायिक राजधानी केपटाउन है और न्यायिक राजधानी ब्लोमफोण्टेन नगर में है।

अफ्रीका के दक्षिण में जो देश है- वे है जाम्बिया, जिम्बाबवे, बोत्सवाना, नामीबिया, अंगोला, मलावी, मोजाम्बिक, लेसोथो और स्वाजीलैण्ड। इनमें से लेसोथो एक ऐसा देश है जो चारों और से दक्षिण अफ्रीका गणराज्य से घिरा हुआ है। लेसोथो में राजशाही है।

दक्षिणी हिन्द महासागर में पूर्वी अफ्रीका के तट से 500 मील (समुद्री) दूर 'मस्कैरीन' द्वीपों का समूह' है। इन द्वीपों में मारीशस स्वतंत्र देश है, अन्य द्वीप रोड्रीग्स है जो मारीशस का ही भाग है।

तीसरा बड़ा द्वीप है रियूनियन जो मारीशस के पश्चिम में स्थित है। यह द्वीप अभी भी फ्रांस के अधिपत्य में है।

मध्य अफ्रीका में भी कई देश है। एक देश का नाम ही है 'मध्य अफ्रीकी गणराज्य' जिसकी राजधानी बांगुई है। मध्य अफ्रीका में कांगों नदी के नाम के आधार पर दो देश हैं- एक है कांगो (ब्राल्जियम) जो फ्रांस की पराधीनता से आजाद हुआ है दूसरा कांगो (किन्शासा) है, जिस पर पहले बेल्जियम का अधिपत्य था। मध्य अफ्रीका के अन्य देश - केमरुन, गैबोन, रुआण्डा और बुरुंडी। समस्त अफ्रीकी देशों का एक संगठन है "अफ्रीकी संघ" जिसका मुख्यालय अदीस आबाबा में है। अदीस अबाबा इथियोपिया की राजधानी है। इस देश के पूर्व में एक देश है सोमालिया जो अफ्रीका से सींग पर स्थित है यह सींग कुछ और नही बस वह भूभाग है जो सींग के आकार में हिन्द महासागर में बाहर निकला हुआ है। हिन्द महासागर की इसी क्षेत्र से अरब प्रायद्वीप के पश्चिम की और जो शाखा गयी है उसे 'लाल सागर' कहते है। लाल सागर और भूमध्य सागर को जोड़ने के लिए स्वेज नहर को बनाया गया है। यह नहर नील नदी का प्रसाद (मिस्र देश) की भूमि को काटकर बनाई गई है।

दो महाद्वीपों, अफ्रीका और योरोप की भूमि के मध्य का सागर है। इस सागर के उत्तर में योरोप महाद्वीप में बहुत देश आबाद हैं। कई कारणों से उनके सामूहिक नाम हैं। उत्तरी योरोप में 'बाल्टिक देश' लैटविया लिथुआनिया और एस्टोनिया स्थित हैं। उत्तरी योरोप में ही 'स्कैण्डिनेनिया' के देश हैं- नार्वे, स्वीडेन, फिनलैण्ड और डेनमार्क। नार्वे 'मध्य रात्रि का सूर्य' का देश और 'हजार झीलों का देश' फिनलैण्ड

तथा परीकथाओं के रचना सम्राट 'क्रिश्चियन हेंस एंडरसन' का देश डेनमार्क- स्कैण्डिनेविया के अन्तर्गत आते हैं। लाईबेरिया (अफ्रीका) साईबरिया (रूस) की तुक का एक क्षेत्र 'आईबेरिया' दक्षिण योरोप के एक प्रायद्वीप है जिसमें 'पुर्तगाल और स्पेन' दो देश आते हैं।

दक्षिण पूर्वी योरोप में एक पर्वत है 'बाल्कन'। इस पर्वत के आसपास बसे देश- बुल्गारिया, अल्बानिया, बोस्निया, हर्जेगोबिना, क्रोएशिया, मेसीडोनिया- 'बाल्कन देशों' के नाम से पहचाने जाते हैं। पिछली कुछ शताब्दियों में इस क्षेत्र का राजनीतिक नक्शा कई बाद बदला है। आपसी फूट और विदेशी षड्यंत्रों के कारण बारबार विखण्डित होने से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में बाल्कानीकरण एक मुहावरा बन गया है।

स्लाव एक संजातीय ETHNIC शब्द है। रूस, बेलारुस, यूक्रेन और मोल्दाविया का सामूहिक नाम 'स्लाव देश' है। पश्चिम योरोप में उत्तर सागर (अटलांटिक महासागर का भाग) की ओर निम्न भू स्तर पर 'निचले देश' - बेल्जियम, हालैण्ड और लक्सम बर्ग बसे हुए हैं। ये तीनों देश योरोप की कांख (बगल) कहलाते हैं और इसके नामों के आरंभिक अक्षरों को मिलाकर 'बेनीलक्स' नाम से भी इन्हें पुकारा जाता है। हालैण्ड का एक अनय नाम नीदरलैण्ड भी है इसके सम्बन्ध में कहावत प्रचलित है कि 'ईश्वर ने दुनिया बनायी किन्तु डच लोगों ने नीदरलैण्ड्स' क्योंकि डच लोगों ने अपनी सूझबूझ के द्वारा सागर तल की भूमि प्राप्त कर पानी को पीछे ढकेला है। इसी क्षेत्र के देश बेल्जियम में योरोपीय देशों के संघ का मुख्यालय है। यहाँ NORTH ATLANTIC TREATY ORGANISATION का भी मुख्यालय स्थित है।

'योरोप का क्रीडांगण' स्विटजरलैण्ड अपनी लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए पूरे संसार में प्रसिद्ध है। संगीत और कला के लिए प्रसिद्ध आस्ट्रिया, चेक और स्लोवाक गणराज्य 'योरोप के हृदय स्थल' के देश हैं।

उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका- दोनो महाद्वीपों को नई दुनिया कहा जाता है। कोलम्बस द्वारा 1498 में खोजे इन दोनों महाद्वीपों के बारे में पुरानी दुनिया (एशिया, योरोप और भूमध्यसागरी अफ्रीकी क्षेत्र) में जानकारी नहीं थी। खोजने के उपरांत कोलम्बस इस नयी भूमि को समझता रहा। कोलम्बस की गलतफहमी एक अन्य अन्वेषक अमेरिगो वास्पुची ने दूर की, इसलिए उसके नाम पर नये महाद्वीपों का नामकरण हुआ। कोलम्बस द्वारा खोजे गये द्वीपों को वेस्टइंडीज कहते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका के फ्लोरिडा राज्य से लगाकर दक्षिण अमेरिका के उत्तर तथा सैकड़ों छोटे-बड़े द्वीप फैले हुए हैं। इनमें से अनेक द्वीप स्वतंत्र देश हैं। स्वतंत्र देशों में है-क्यूबा, जमैका, डोमिनिका, ग्रेनाडा, सेंट लूसिया, सेंट विसेंट, ट्रिनिडाड-टोबैगो। वेस्टइण्डीज का एक द्वीप हिस्पेनिओला दो स्वतंत्र देशों -हैटी और डोमिनिकन रिपब्लिक में विभाजित है। इसी द्वीप समूह के एक द्वीप प्योर्टो रिको की विचित्र राजनीतिक स्थिति है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका इस द्वीप के निवासियों को अपना नागरिक तो मानता है लेकिन उन्हें अमेरिका के राष्ट्रपति के निर्वाचन में भाग लेने का अधिकार नहीं दिया गया है।

भौगोलिक स्थिति के कारण एक सामूहिक सम्बोधन प्रचलित है 'अमेरिका की पूँछ (दुम) यक वह भूभाग है जो उत्तरी अमेरिका को दक्षिणी अमेरिका से जोड़ता है। पतला भूभाग होने के कारण पूँछ से सदृश है। मध्य अमेरिकी ये देश है 'ग्वाटेमाला, होण्डूरास, कोस्टारिका, अल-साल्वेडोर, निकारागुआ, बेलीज औ पनामा।

मध्य अमेरिका के उत्तर में मैक्सिको में लगाकर पूरे दक्षिण अमेरिका तक के क्षेत्र के लिए एक सामान्य और समूह नाम प्रचलित है- 'लैटिन अमेरिका। ब्राजील को छोड़कर सभी देशों की मुख्य भाषा स्पैनी है। ब्राजील की भाषा पुर्तगाली है। स्पैनी और पुर्तगाली भाषाएं योरोप की प्राचीन भाषा लैटिन से निकलकर विकसित हुई हैं इस कारण 'लैटिन अमेरिका' नामकरण हुआ लैटिन अमेरिका में दो अन्य देश भाषायी दृष्टि से अपवाद हैं- ग्याना (अंग्रेजी भाषा) और सूरीनाम (डच भाषा)।

समस्त अमेरिकी देशों का एक क्षेत्रीय संगठन हैORGANISATION OF AMERICAN अमेरिकी राज्यों (देशों) का संगठन है। इस संगठन का मुख्यालय वाशिंगटन में है।

देशों के समूह नाम भौगोलिक, सांस्कृतिक और आर्थिक आधार पर स्थाई होते हैं। तात्कालिक और सैन्य कारणों पर आधारित समूह नाम आवश्यकता की समाप्ति पर खत्म हो जाते हैं जैसे कि SEATO 'बगदाद पैक्ट' और 'वारसा पैक्ट' आदि हो गये।

- इन्दौर (म.प्र.)

स्वयं बनें वैज्ञानिक :
नया खेल खेले : बोतल टेनिस

आलेख	अनुवाद
डॉ. राजीव तांबे	सुरेश कुलकर्णी

इस खेल को बनाने के लिए हमको निम्नलिखित सामग्री लगेगी -

टेबल टेनिस का पिंगपॉग गेंद।

चौड़े मुँह की ऊँची बोतल, बोतल लगभग एक फीट ऊँची चाहिए।

बोतल टेनिस खेलने की कुछ शर्ते -

टेबल (मेज) पर स्थित बॉल को छुए बिना वह बोतल में जाना चाहिए।

गेंद को फूंक नहीं मारना

टेबल या मेज हिलना नहीं

बोतल को आड़ी नहीं करना

चलो खेल शुरू करो -

सर्वप्रथम मेज पर पिंगपॉग का गेंद रखो, उसके पास बोतल रखो। अब बोतल पर गेंद रखो। दोनों हाथों से बोतल पकड़ कर रखो तथा बोतल मेज पर तेजी से घुमाओ। बोतल ने गति पकड़ी की गेंद उछलने लगेगी, गेंद बोतल में लुढक जाएगी। इसी समय बोतल को सीधी करो, उछलने वाली गेंद बोतल के अन्दर होगी।

यह इसलिए होता है कि, बोतल के किनारे गोल होते है इस कारण गेंद भी गोल गोल घूमती है, इस कारण जो वलय निर्मित होते हैं वे गेंद को गोलाकर घुमाते हैं और बोतल के ऊपर चलने को उद्यत करते हैं और इसी समय बोतल को उठाई तो गेंद अपने आप उसमें समाहित होती है।

अब आप एक काम कीजिए। अलग-अलग तरह की गेंद इस्तेमाल करके देखें। बॉल को घूमाकर देखे और फिर उस पर बोतल रखें।

क्या होगा? करके देखे और बताइये हमें।

प्रतीक्षा रहेगी आपके इस प्रयोग की।

- पुणे (महाराष्ट्र)

रास्ता बताइए

• चांद मोहम्मद घोसी

मायावी रावण के पास धनुषधर राम को पहुँचाए ताकि रावण का वध हो सके।

– मेड़तासिटी (म.प्र.)

मत लाना चीन के खिलौने

कविता

कल्याणमय आनंद

चीन कर रहा सीमा पर छेड़छाड़
सुन लो तनिक हम बच्चों का उद्गार।
बाबा! चीनी सामान नहीं लेना
दिखाना देश के प्रति सच्चा प्यार।
हमारे बहादुर सैनिक सीमा पर
चीन से करते हैं हर दिन तकरार।
देश के बच्चों की एक ही फरियाद
चीनी सामान का करें बहिष्कार।
चीन की बनी मनमोहक पिचकारी,
लड़ी, राखी हो या डिजाइनर हार।
देशहित में रक्षा की शपथ लेकर
हम सब मिलकर करें इनको इनकार।
बाबा! गलती से भी घर मत लाना
चीन के बने खिलौने अबकी बार।
चीन को है अब कड़ा सबका सिखाना
माँ भारती पुकारती बारम्बार।
-पुनाईचक (बिहार)

सही उत्तर :
संस्कृति प्रश्नमाला – मंदाकिनी, बलराम, लीकावली, थाईलैण्ड, नौवें, औरंगजेब का मामा, शायस्ताखान
गाव–आयुर्वेद, डा. खान खोजे, महाकवि माघ, मा. दत्तोपंत ढेंगड़ी, २३ जुलाई १९५५ को।
अलझ गए – रोहित राशि का ममेरा भाई है।

बाल प्रस्तुति

गलती

कहानी

अलिशा सक्सेना

प्रिया को नाचने की बहुत रुचि था। और इस रुचि को वह धुन की तरह पूरा करती थी। दिन-रात नृत्य के अलावा कुछ नहीं सूझता था। एक दिन समाचार पत्र में एक समाचार आया कि उनके नगर में नृत्य स्पर्धा आयोजित की जा रही हैं। यह समाचार पढ़कर प्रिया की प्रसन्नता का ठिकाना ना रहा वह इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहती थी। उसने अपनी माँ से इस बात की अनुमति मांगी, तो उन्होंने मना कर दिया, उन्होंने कहा कि अभी तुम्हारी परीक्षा सिर पर है, पहले परीक्षा की तैयारी करो नाच गाने के बारे में बाद में सोचना। प्रिया के बहुत जिद करने पर उसकी माँ सहमत हो गई। लेकिन उन्होंने प्रिया के सामने एक शर्त रख दी, कि पहले प्रिया पढ़ाई करेगी और उसके बाद वह नृत्य पर ध्यान देगी।

वह खूब मेहनत और लगन से प्रतियोगिता की तैयारी करने लगी। अभी प्रतियोगिता आयोजित होने में चार दिन शेष थे।

बाहर वर्षा हो रही थी, उसकी सहेलियाँ बाहर पानी में खेल रही थीं, प्रिया भी खेलना चाहती थी लेकिन उस की माँ ने उसको समझाया कि तुम बीमार पड़ सकती हो और अभी तुम्हारी परीक्षा और नृत्य प्रतियोगिता दोनों है। इसलिए अभी तुम्हे पानी में नहीं भीगना चाहिए। प्रिया ने माँ की चेतावनी को अनसुना किया और अपनी सहेलियों के साथ खेलने चली गई। उसके सभी सहेलियों ने वर्षा में खेलना शुरु कर दिया, वह भी उन सभी में सम्मिलित हो गई। खेलते-खेलते प्रिया का पैर फिसल गया और वह गिर गई, उसके पैर में बहुत पीड़ा हो रही थी। प्रिया ने उठने का प्रयास किया लेकिन उससे उठा नहीं जा रहा था, दर्द भी बहुत हो रहा था संभवत: उसके पैर की हड्डी टूट गई थी। प्रिया की सहेली ने उसकी माँ को फोन किया। माँ ने प्रिया को देखा पर कुछ कहा नहीं और न ही डांटा, वे तुरंत उसे डाक्टर के पास ले गई। डाक्टर ने कहा की पैर में मोच आ गई है। प्रिया कुछ दिन में ठीक हो जाएगी। लेकिन उसे विश्राम की बहुत आवश्यक है। पैर पर जोर नहीं डालना हैं।

नृत्य प्रतियोगिता केवल चार दिन बाद थी प्रिया सिर्फ चार दिनों में ठीक नहीं हो सकती। प्रिया घर आई और सीधे अपने कमरे में गई क्योंकि वह बहुत दुखी थी। उसने कमरे में बैठकर सोचा कि उसने माँ की बात न मानकर कितनी बड़ी गलती की। पर उसने साहस नहीं छोड़ा और नृत्य प्रतियोगिता की तैयारी जारी रखी।

प्रिया ने ठान लिया था कि उसे प्रतियोगिता में अवश्य भाग लेना है। कठिन अभ्यास के बाद उसे मंच पर कदम रखने का मौका मिला। सभी उत्सुक थे कि कैसे प्रिया अपने घायल पैर के साथ नृत्य करती है। प्रदर्शन के बाद हर कोई चकित था, नृत्य सुंदर किया गया था और प्रिया की पक्की धुन ने इसे और भी अद्‌भुत बना दिया। प्रिया प्रथम पुरस्कार तो नहीं जीत सकीं लेकिन फिर भी उसे प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।

इतनी बड़ी प्रतियोगिता में पुरस्कार लेते समय अचानक प्रिया को अपनी दादी की बात याद आ गई, कि हमें कुछ पाने के लिए कुछ खोना ही पड़ता है। काश! प्रिया ने उस दिन अपनी माँ की बात मान ली होती और वर्षा में खेलने ना गई होती तो उसे प्रथम पुरस्कार भी मिल सकता था। और अब उसे अपनी दादी और माँ की पूरी बात समझ आ गई। वह पुरस्कार ले घर की ओर चल पड़ी। अब वह ऐसी गलती कभी नहीं दुहराएगी।

- इन्दौर (म.प्र.)

अपनी धुरी पर पृथ्वी बहुत तेज घूमती है..

संचित्र विज्ञान चर्चा- संकेत गोस्वामी

कभी कभी ग्लोब को देखकर बड़े-छोटे अक्सर उसे घुमा देते हैं. घूमती पृथ्वी आकर्षक लगती है. सच में भी हमारी पृथ्वी लगातार घूम ही रही है.

पृथ्वी दो तरह से घूमती है एक, तो अपनी धुरी पर और दूसरे, सूर्य की परिक्रमा लगाते हुए. अपनी धुरी पर यह एक चक्कर 23 घंटे,56 मिनट,4.091 सैकंड में पूरा करती है.

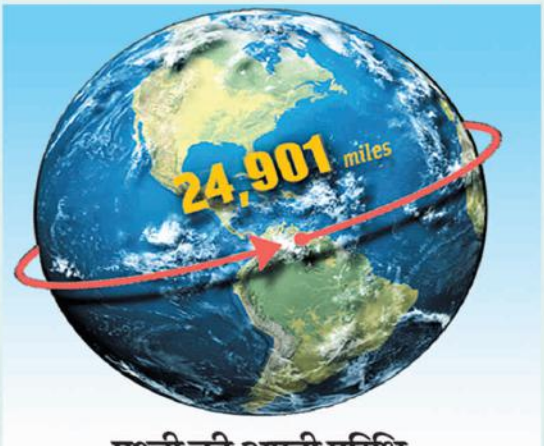

पृथ्वी की अपनी परिधि 24,901 मील है.

हालांकि कहा यही जाता है कि पृथ्वी की घूर्णन गति एक सी ही रहती है पर इसमें बेहद जरा सा अंतर देखा गया है. समुद्र का ज्वार-भाटा और पृथ्वी की परतों का घर्षण इसकी गति में अंतर का कारण हैं.

पृथ्वी ध्रुवों पर कुछ चपटी है,एकदम गोल नहीं। पृथ्वी के केन्द्र से ध्रुव अधिक निकट होते हैं इस कारण ध्रुवों पर गुरुत्वाकर्षण बल अधिक होता है। वहां वस्तु या व्यक्ति का भार, पृथ्वी के भूमध्य रेखीय क्षेत्रों से कुछ ज्यादा होगा क्योंकि भूमध्य रेखा पृथ्वी के केन्द्रों से ध्रुवों के मुकाबले दूर है।

अपना एक चक्कर पूरा करने के लिए पृथ्वी भूमध्य रेखा पर करीब 1600 किलोमीटर यानी लगभग 1000 मील प्रतिघंटा की गति से घूम रही है.

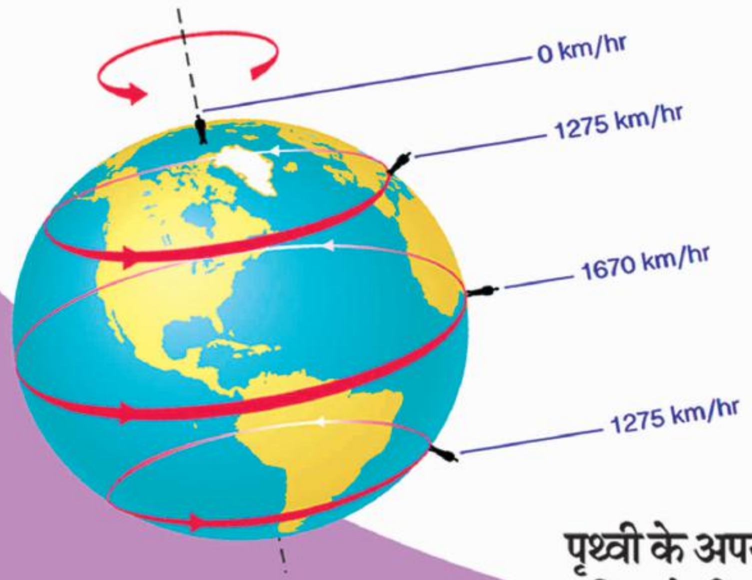

घूमती हुई हमारी धरती अपने अक्ष पर 23 डिग्री झुकी हुई है।

पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने की गति भले ही एक हो पर यह पृथ्वी के अलग-अलग हिस्से पर अलग-अलग गति का प्रतीक बनेगी.

चित्र के अनुसार इसे समझा जा सकता है कि जैसे कोई ध्रुवों पर है तो उसका बहुत बड़ा चक्कर नहीं लग रहा, कोई विषवुत रेखा पर है तो उसका ध्रुव से ज्यादा, पर भूमध्य से छोटा चक्कर लग रहा है. और कोई भूमध्य रेखा पर है तो उनके लिए सबसे बड़ा चक्कर लग रहा है यानि सबके लिए घूम रही पृथ्वी अलग-अलग गति पर है.

टूटते तारों और उल्का पिंड के वायुमंडल में घर्षण से गिरी राख के कारण पृथ्वी का वजन प्रतिदिन 27 टन बढ़ जाता है किंतु इससे उसकी धूर्णन गति में कोई फर्क नहीं पड़ता।

समाप्त

आओ ऐसे बनें

स्वामी रामतीर्थ

प्रसंग

-मदन गोपाल सिंहल

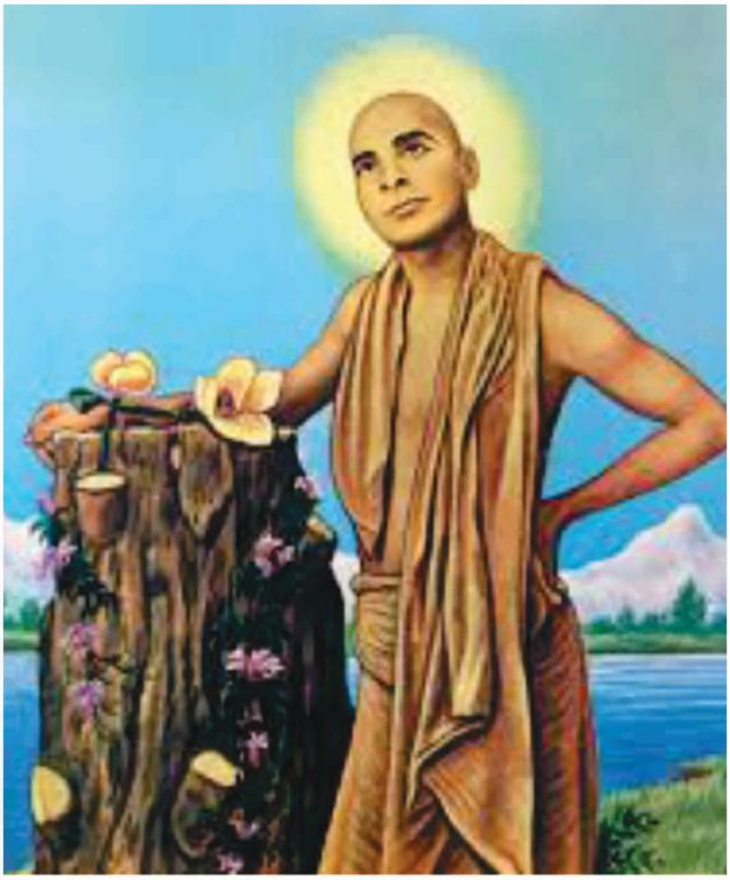

विद्यालय की वार्षिक परीक्षायें चल रही थीं। उस दिन गणित का पर्चा था।

प्रश्न-पत्र में दस प्रश्न थे और उन सबके ऊपर एक नोट लिखा था- कोई से भी छ: प्रश्न कीजिये।

बालक ने प्रश्न पत्र पढ़ा किन्तु उसे कोई भी प्रश्न ऐसा जटिल प्रतीत न हुआ जिसे वह सरलता पूर्वक न कर सके।

उसने पहले ही प्रश्न से परचे को करना प्रारम्भ कर दिया और नियत समय से पूर्व ही दसों प्रश्न हल कर डाले।

और फिर उसने भी अपनी कॉपी के प्रथम पृष्ठ पर एक नोट लिख दिया- "कोई से भी छ: प्रश्न देख लीजिये।"

परीक्षक महोदय ने कापी देखी तो वह आश्चर्य चकित से रह गये उस बालक की अद्‌भुत प्रतिभा पर।

इस बालक का नाम था तीर्थ राम- जिसने बड़े होकर स्वामी रामतीर्थ के नाम से संसार को धर्म का वह दिव्य संदेश सुनाया कि शताब्दियों का अन्धकार जागृति के प्रकाश में विलीन हो गया।

शब्द चित्र - राजेश गुजर

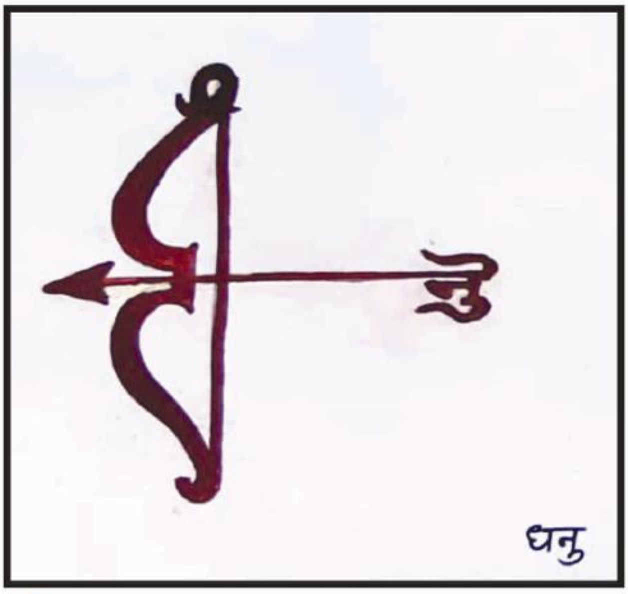

पहुँचाओं तो जानें

– राजेश गुजर

बच्चों, नवदुर्गा उत्सव में गरबा करने के लिए इन बच्चों को माताजी के पाण्डाल तक पहुँचाओं।

(लोककथा)

सातवीं रानी

मूल अंग्रेजी- मानसरंजन महापात्रा
अनुवाद - सुषमा यदुवंशी

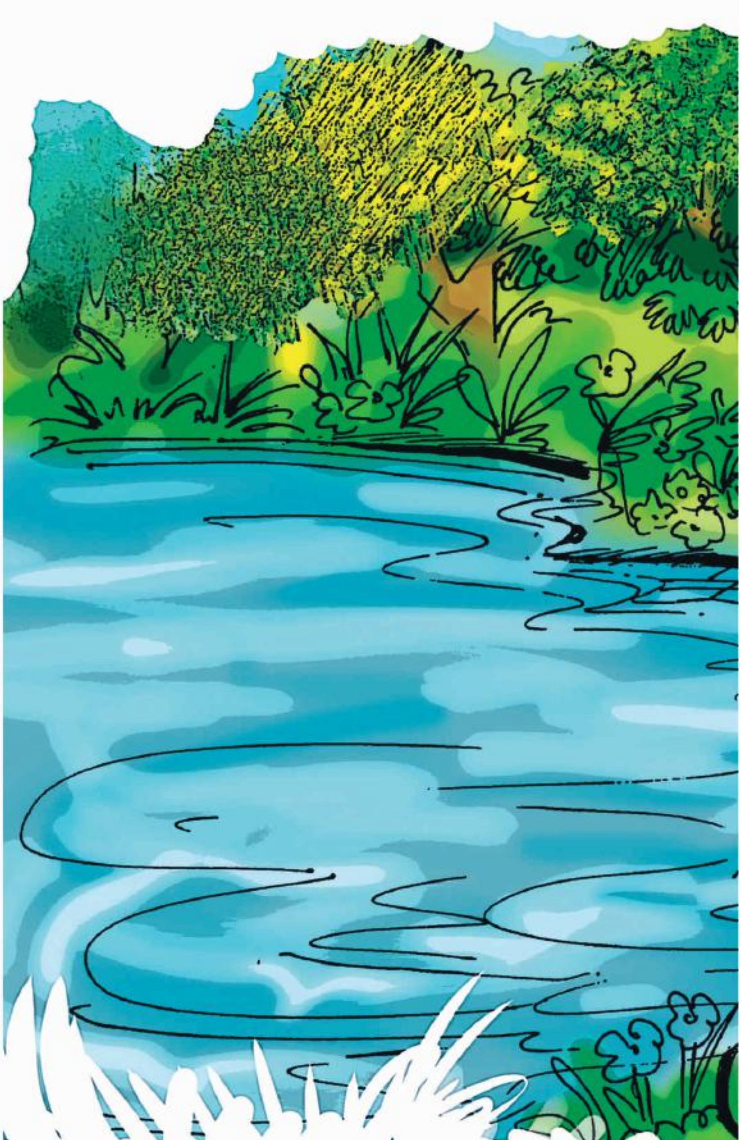

रामआदित्य भरतपुर के राजा थे। उनकी छ: रानियाँ थी। वह एक परोपकारी राजा थे। वह अपनी राजधानी में क्या हो रहा है, जानने के लिए घूमा करते थे।

इसी दिनचर्या के दौरान, उन्होंने एक महिला को रोते हुए सुना। वह उसके घर के पास गए, तभी उनको एक पुरुष की कठोर आवाज सुनाई दी। जो अपनी पत्नी पर चिल्ला रहा था, और कह रहा था कि "तुमने मेरे जीवन को नर्क बना दिया है" इतनी लड़कियों को जन्म दिया है कि मेरे पास इनको देने के लिए दहेज नहीं है, तो उनसे कौन विवाह करेगा? हमारी सबसे बड़ी बेटी विवाह योग्य हो गई है अगर मैं उसके लिए योग्य वर नहीं ढूँढ पाया तो स्वयं को फाँसी पर झूलने के अलावा कोई उपाय नहीं बचेगा।

यह सुनकर युवा राजा को उस परिवार पर दया आ गई और उसने दरवाजा खटखटाया। वह आदमी दरवाजा खोला। राजा रामआदित्य उस व्यक्ति से पीने के लिए एक गिलास पानी मांगा। सबसे बड़ी लड़की पानी लाई। वह बहुत ही सुंदर लड़की थी।

अगले दिन राजा अपने मंत्री से बात की और अपनी इच्छा व्यक्त की कि वह उस लड़की से विवाह करना चाहता है। मंत्री ने लड़की के पिता से संपर्क किया और लड़की का पिता विवाह को तैयार हो गया। विवाह बहुत ही धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

राजा की अन्य रानियाँ विभिन्न प्रदेशों की राजकुमारियाँ थीं जब उन्होंने कि राजा एक सामान्य व्यक्ति की बेटी से विवाह कर रहा है तो वह लड़की से ईर्ष्या करने लगी और उसे हटाने के लिए रचने लगीं। एक दिन सातों रानियाँ पास के जंगल में घूमने के लिए गईं, जहां एक सुंदर तालाब भी था। वह सब उस तालाब में तैरने की इच्छा प्रकट करती है।

सातवीं रानी को पता नहीं था कि कैसे तैरना? इसलिए उसने उन से अनुरोध किया कि वह तालाब के बाहर ही रहेगी, लेकिन वह सभी सहमत नहीं हुई। उन सभी ने उससे पानी में उतरने के लिए कहा ताकि उसे तैरना सिखा सके गरीब लड़की ने वैसा ही किया जैसा कि बताया गया था, उसने झील में प्रवेश किया लेकिन दूसरी रानियों ने उसे पानी में धक्का दिया, उसे मुक्का मारा और पानी में डूबने के लिए छोड़ दिया और वे सब महल में वापस आ गई।

जब राजा रात को लौटा तो छ: रानियों ने उसे बताया कि नयी रानी को बाघ ने मार डाला। जब वह जंगल में घूमने के लिए गई थी। राजा को बहुत दु:ख हुआ उसने जंगली में जाकर सातवीं रानी को ढूंढा लेकिन उसकी कोई खबर या निशानी नहीं मिली।

झील के पास गई, यह देखने की कौन गा रहा था। उन्होंने जैसे ही देखा वह हतप्रभ रह गई। झील पर खूबसूरत नौका दिखाई दे रही थी। चारों और रंगीन था। राजा के आदमियों की सहायता से वे सुंदर नाव पर पहुंची। वहां उन्होंने कमल के सिंहासन पर एक महिला को बैठे देखा। जिसके आसपास गायक मधुर गीत गा रहे थे। अचानक से एक पंख से राजा प्रकट हुआ, उसने महिला का घूंघट को उठा लिया और उन छ: रानियों ने देखा कि वह तो सातवीं रानी थीं। वे भयचकित हो गईं। इस दृश्य को देखने के बाद सभी वहाँ से चली गई और कभी राज्य में वापस नहीं आई।

कुछ समय बाद राजा का झील पर जाना हुआ, जहाँ युवा रानी डूबी थी। जब वह आराम कर रहा था तभी उसके कानों में कुछ सुनाई दिया उदासी से भरा लेकिन दिल को छूने वाला संगीत, उसने अपने आदमियों को कहा कि गायक का पता लगाएं। उसके लिए आश्चर्य की यह बात थी कि जो गा रहा था वह उसकी सातवीं रानी थी। वह बहुत बुरी हालत में थी। तुरंत शाही वैद्य को बुलाया गया कुछ दिनों में रानी पूरी तरह से स्वस्थ हो गई।

यह बात राजा ने अपनी छ: रानियों में से किसी को भी नहीं बताई थी। एक दिन उसने अपनी छ: रानियों को जंगल में चलने के लिए कहा। सभी खुशी से गई। जंगल में झील के पास डेरा डाला गया। जहाँ छ: रानियों ने मिलकर सातवीं रानी को डुबो दिया था। शीघ्र ही रात हो गई। राजा दूर था और सभी रानियाँ अकेली थी। रात के मध्य में उन्होंने झील के बीच से संगीत की आवाज सुनाई दी। वे

- पुरी (उड़ीसा)

छः अंगुल मुस्कान

-विष्णुप्रसाद चौहान

आजकल के शिक्षक पालक को विद्यालय में बुलाते है।
हमारे समय पर शिक्षक... घर आकर पिताजी के पिटाई करवाकर चाय भी पीकर जाते थे।

*****

ये जो तुम वाट्सएप्प पर मैसेज भेजने के बाद बार-बार दो नीली धारियाँ चेक करते हो, ना! इसे ही शास्त्रों में उतावलापन कहा गया है।

*****

वो तो भगवान का शुक्र है कि पति अक्सर सुंदर ही होते है। वरना दो दो लोगों का ब्यूटी पार्लर जाना कितना भारी पड़ता।

*****

आज रविवार है...
इस मैसेज को 21 ग्रुप में भेजें और देखें...
कल सोमवार होगा...
पढ़कर अनदेखा किया तो...
परसो मंगलवार होगा।

- ढाबलाखुर्द

विजया दशमी

कविता

ओम उपाध्याय

त्योहारों के अनुक्रम में
जो विशिष्ट त्योहार आते हैं,
जिन्हे हँसी-खुशी उत्साह से
सब मिलकर मनाते हैं।
ऐसा ही है एक ऐसा पर्व
जो आश्विन मास में आता है,
जो कहीं दशहरा तो कहीं
विजया दशमी कहलाता है।
इस दिन सत्य जीतता है
व असत्य का होता शमन।
जब मेघनाद कुंभकर्ण
औ' रावण का होता दहन।
दशहरे के दिन पर्व का
उल्लास देखते ही बनता,
जब रावण दहन कर
वापस लौटती है जनता।
त्रेता युग में राम के द्वारा
रावण का हुआ था संहार,
बुरे पर भले की जीत का
विजया दशमी है त्योहार।

- इन्दौर (म.प्र.)

आपकी पाती

-शुभदा पाण्डेय, चित्तौड़गढ़

सुंदर अंक, आकर्षक साज सज्जा, उत्कृष्ट रचनाएँ एवं कुशल सम्पादन और संयोजन से युक्त विविध विधाओं की इन्द्रधनुषी आभा से युक्त बालोपयोगी अंक। हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। सभी सम्मिलित, प्रकाशित रचनाकारों को भी अनंत शुभकामनाएं।

*****

- वेदमित्र शुक्ला, नई दिल्ली

सादर धन्यवाद। बड़ा ही मनोहारी अंक बन पड़ा है। दीनदयाल जी के जन्मदिवस की आभार सहित अग्रिम बधाई।

घड़ी की कीमत
चित्रकथाः देवांशु वत्स
एक दिन...
मामा, यह घड़ी बनवानी है।
किसकी घड़ी है बेटा?
काका की।
बेटा, अपने मामा से बोलना कि जितने में उन्होंने घड़ी प्राप्त की है...
... उसका आधा उन्हें देना होगा।
ठीक है।
शाम को घड़ी ले जाना।
शाम को...
लो, घड़ी बन गई।
यह लीजिए।
अरे! पैसे कहां है? और लिखा है- 'आधा धन्यवाद'
मामा, मेरे काका को किसी ने उपहार में यह घड़ी दी थी...
...और उन्होंने देने वाले को 'धन्यवाद' दिया था।

बंद देश का कोना कोना

कविता

केशरी प्रसाद पाण्डेय 'बृहद्'

अब काहे का रोना धोना।
बन्द देश का कोना कोना।।
सुनो कोरोना बहुत हो गया, डरने और डराने की।
दो गज की दूरी रख कर के, पढ़ने और पढ़ाने की।
हम सब बच्चे समझ गए हैं, भौतिक दूरी का मतलब
शीघ्र बताओ जाने की तिथि, नहीं चले अब कोई गफलत।

अपनी स्वयं सुरक्षा करना, हम बच्चों को आता है।
संस्कार शिक्षा में हमको, यही पढ़ाया जाता है।
शालायें सब बन्द कराकर, अब भी तुम मुस्काते हो।
तुमको है धिक्कार कोरोना, बच्चों को धमकाते हो।।

हम भारत के वीर बहादुर, तुमको खेल दिखायेंगे।
ठहरो हो जाने दो राखी, गणपति से तुझे पिटायेंगे।
फिर भी नहीं अकल आई तो, लंका की भाँति जलायेंगे।
निश्चय ठान लिया है हम नवराते तक हम तुझे भगायेंगे।
यह स्वतंत्र है देश हमारा
नहीं चलेगा कोरोना कोरोना
अब काहे का रोना धोना
बंद देश का कोना कोना

- जबलपुर (म.प्र.)

पुरस्कार

कहानी

तारादत्त जोशी

देउल गाँव की पाठशाला की प्रसिद्धि दूर-दूर तक थी। इस प्रसिद्धि का कारण था, इस शाला की स्वच्छता और महकती हुई फुलवारी। हर कक्षा की अपनी फुलवारी थी और हर बच्चे का अपना फूल।

शाला का प्रांगण इतना सुंदर था कि यहाँ से गुजरने वाला हर व्यक्ति एक क्षण के लिए रुके बिना नहीं रह सकता था।

पाठशाला में शिक्षकों के अतिरिक्त साफ सफाई के लिए एक सफाई करने वाला भी नियुक्त था। बच्चे प्रेम से उन्हे शम्भू काका कहकर पुकारते थे। काका शाला की सफाई में कोई योगदान नहीं देते थे। विद्यालय की पूरी सफाई बच्चों के जिम्मे थी। यद्यपि प्रधानाध्यापक महोदय ने शंभू काका को कई बार अपना काम करने के लिए चेताया और वेतन रोकने की धमकी भी दी, लेकिन काका के कान पर जूं नहीं रेंगती।

शंभू काका बहुत चतुर थे। जब भी कोई अधिकारी भ्रमण पर आते तो काका उनका बेग पकड़ कर सबसे पहले उन्हें विद्यालय की फुलवारी दिखाते और फिर कार्यालय में ले जाते। विद्यालय की सुंदरता देखकर अधिकारी समझते यह सब शंभू काका ने किया होगा। कई बार तो इसी भ्रम से उन्हें पुरस्कार तक मिल चुका था। परिश्रम बच्चे करते और फल काका को मिलता। बच्चे इस बात से नाराज रहते थे, लेकिन उनका कोई बस नहीं था। बेचारे मन मसोस कर रह जाते।

एक बार ग्रामीण क्षेत्र की समस्याओं के समाधान के लिए जिलाधिकारी महोदय को शिविर आयोजित करना था। अत: उन्होंने शिविर आयोजित करने हेतु जगह चिन्हित करने के लिए अपने सहायक को इस क्षेत्र में भेजा। ग्रामीण लोगों ने सहायक महोदय को बताया कि शिविर के लिए सबसे उपयुक्त स्थान तो शाला ही है। अत: सहायक महोदय शाला की ओर चल दिए।

जिस समय सहायक महोदय शाला के द्वार पर पहुँचे उस समय शंभू काका अल्पाहारगृह (केंटीन) में बैठे चाय की चुस्कियाँ ले रहे थे। कार के दरवाजे पर पहुँचते ही कार के पास गए और उन्होंने आदत के अनुसार सहायक महोदय से बैग मांगना चाहा, किन्तु उन्होंने यह कह कर मना कर दिया कि मैं अपना बैग ले जा सकता हूँ।

शंभू काका ने गेट खोला और दोनों अंदर चले गए। अंदर कुछ बच्चे शाला की सफाई कर रहे थे, शेष अपनी-अपनी क्यारियों में व्यस्त थे। विविध प्रकार के फूलों की छटा से निखरी क्यारियों ने सहायक महोदय का मन मोह लिया। क्यारियों का निरीक्षण करते हुए वे काका के साथ प्रधानाचार्य के कक्ष में पहुंचे। प्रधानाचार्य शिक्षकों के साथ बैठक कर रहे थे। शंभू काका के अंदर जाकर बताया कि जिले से कोई अधिकारी आए हैं। प्रधानाचार्य ने सभी शिक्षकों के साथ अधिकारी महोदय का स्वागत कर कार्यालय में बैठने का आग्रह किया।

सहायक अधिकारी महोदय ने प्रधानाचार्य जी को बताया कि हमें दो दिन के लिए एक शिविर का आयोजन करना है और विद्यालय प्रांगण की आवश्यकता होगी। प्रधानाचार्य जी ने सभागृह में व्यवस्था करने की बात कही। जाते-जाते अधिकारी महोदय ने सुंदर फुलवारी के लिए सभी बच्चों और प्रधानाचार्य जी को बधाई दी और पूछा कि क्या आपके विद्यालय में सफाई करने वाला नहीं हैं? सभी बच्चे और प्रधानाचार्य शंभूकाका की ओर देखने लगे। अधिकारी महोदय सारी बात समझ गए। काका का चेहरा देखने लायक था।

अगले रविवार व सोमवार को शिविर का आयोजन होना था। बच्चों ने गुरुजनों के साथ मिलकर सभागृह को अच्छी तरह व्यवस्थित कर दिया। अधिकारियों के बैठने का स्थान, महिलाओं, पुरुषों व वरिष्ठ नागरिकों के साथ पत्रकार दीर्घा प्रत्येक जगह पर तख्तियाँ लगा दी गई ताकि किसी को बैठने में असुविधा न हो।

रविवार की सुबह प्रधानाचार्य जी ने आकर पुन: एक बार निरीक्षण किया और शंभू काका से कहकर सभागृह में पानी रखवा दिया।

जिलाअधिकारी महोदय विद्यालय प्रांगण का निरीक्षण करते हुए सभागृह की ओर जाने लगे। सुंदर फुलवारी ने उनका मन मोह लिया। सभागृह की व्यवस्था देखने के बाद तो वे प्रसन्न हो गए और उन्होंने प्रधानाचार्य महोदय से कहा कि वे कल एक घंटा बच्चों के साथ बात करेंगे। आज शंभू काका भी प्रधानाचार्य जी के पीछे-पीछे चल रहे थे। सारी व्यवस्था कर प्रधानाचार्य जी घर को चले गए।

दूसरे दिन समयानुसार विद्यालय प्रारंभ हुआ। प्रार्थना सभा के बाद प्रधानाचार्य व अध्यापकों सहित सारे बच्चे अपनी अपनी क्यारियों का निरीक्षण करते हुए

कक्षा में गए। पठन-पाठन प्रारंभ हो गया। निश्चित समय पर एक कालबेल लगी और सभी बच्चे प्रार्थना स्थल पर पहुँचे। जिलाधिकारी महोदय और उनके सभी सहायक भी प्रार्थना स्थल पर पहुँचे और प्रधानाचार्य महोदय भी अपने सहकर्मियों के साथ पहुँच गए।

जिलाधिकारी महोदय ने बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहा- "आपका विद्यालय देखकर मुझे अपना विद्यार्थी जीवन याद आ गया है और इच्छा हो रही है कि एक बार मैं फिर से इस विद्यालय में पढ़ूँ। निश्चित रूप से यहाँ के प्रधानाचार्य महोदय, शिक्षक और आप लोग प्रशंसा के पात्र हैं किन्तु मुझे आश्चर्य हो रहा है कि मेरे पास कभी इतने सुन्दर विद्यालय का प्रस्ताव स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार हेतु नहीं आया।"

प्रधानाचार्य जी ने कहा- "आपके द्वारा हमारे विद्यालय को जन समस्या निवारण के पुनीत कार्य हेतु चुना जाना और हमारे बच्चों के साथ बात करना ही हमारे लिए सौभाग्य की बात है। मुझे उम्मीद है कि आपकी गरिमामयी उपस्थिति हमारे बच्चों के लिए बहुत प्रेरणादायी होगी और हमारे लिए यह सबसे बड़ा पुरस्कार है।"

जिलाधिकारी महोदय ने प्रधानाचार्य की ओर इशारा करते हुए बच्चों से कहा- "जिस विद्यालय में साफ-सफाई का पूरा काम बच्चे करते हों, मुझे लगता है उस विद्यालय में एक सफाई करने वाले का कोई काम नहीं है। अत: मैं आपके शंभू काका को प्रतिनियुक्ति पर अपने कार्यालय ले जा रहा हूँ। वहाँ पर बहुत बंजर जमीन है और जब वहाँ भी यहाँ की तरह फुलवारी खिल जाएगी तो शंभू काका वापस आ जाएंगे। यह सुनकर शंभू काका के पैरों तले धरती खिसक गई। उन्हें अब अपनी भूल का अनुभव होने लगा।

अंत में जिलाधिकारी महोदय ने सभी बच्चों को मिठाई बंटवाई और बच्चों से इसी तरह हर कार्य परिश्रमपूर्वक से करने को कहा।

एक महीने बाद शाला में एक साथ दो पत्र पहुँचे। जिसमें से एक शाला के "राज्यस्तरीय स्वच्छ शाला पुरस्कार" में चयन की सूचना थी और दूसरे में शंभू काका के स्थानान्तरण की सूचना।

दूसरे दिन प्रार्थना सभा में प्रधानाचार्य महोदय ने सभी को बताया कि शाला का चयन "स्वच्छ शाला पुरस्कार" हेतु हुआ है और सभी को बधाई दी। उन्होंने कहा कि जो मन लगाकर काम करते हैं, पुरस्कार स्वयं उनको ढूंढ लेते हैं। आज आप लोगों के साथ भी यही हुआ है। इसीलिए यह पुरस्कार आप सब का है यदि आप भविष्य में भी मन लगाकर हर काम करेंगे तो पुरस्कार आप को खोज लेंगे।

दूसरी सूचना यह भी है कि हमारे विद्यालय में शंभू काका का स्थानान्तरण हो गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि जो व्यक्ति अपने काम को मन लगाकर नहीं करता है, उसे भी अपने काम के अनुरूप फल प्राप्त होता है। किन्तु शंभू काका वहाँ परिश्रमपूर्वक काम करेंगे तो शीघ्र ही यहीं वापस आ जाएंगे।

- हरिपुरा (उत्तराखण्ड)

बड़े लोगों के हास्य प्रसंग

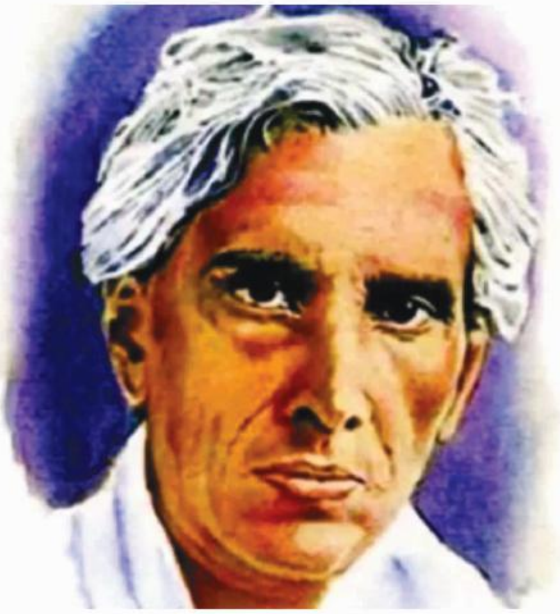

शरत्चन्द्र, प्रसिद्ध बंगला उपन्यासकार, एक बार एक साहित्यिक गोष्ठी में गए तो कुछ लोंगों ने जूता चोरी होने की चर्चा छेड़ दी। शरत्चन्द्र उस दिन नये जूते पहनकर गोष्ठी में आए थे। वे यह सुनकर बहुत घबराए और चुपचाप जाकर एक अखबार में जूते लपेट लाए और अपनी जगह पर आ बैठे। इसी बीच वहीं बैठे रवीन्द्रनाथ ठाकुर को भी इसकी सूचना मिली तो वे शरत् से बोले, "यह बगल में क्या है शरत्?"

शरत् बोले, "जी, ऐसे ही, एक चीज है।"

रवीन्द्र ने फिर पूछा, "अरे भाई! हम भी तो जाने, क्या चीज है, क्या कोई पुस्तक है?"

शरत् सिटपिटाकर बोले, "जी।"

"कौन सी पुस्तक है?"

अब शरत् चुप, क्या उत्तर दें! तभी रवीन्द्र ने कहा, "इसमें लज्जा की क्या बात है? "पादुका-पुराण" ही है न! ठीक है, बगल में दबाकर रखिये?"

*****

शरत्चन्द्र चटर्जी का नाम जब साहित्य में प्रसिद्ध हो गया तो उन्हीं के नाम का एक ओर साहित्यिक पैदा हो गया। वह भी काफी लिख चुका था।

एक दिन शरत्चन्द्र चटर्जी, जब बहुत दिनों के बाद अपने एक प्रिय मित्र से मिले तो बोले, "क्यों दोस्त, पहचाना नहीं? मैं शरत्चन्द्र चटर्जी हूँ।"

मित्र ने जरा विनोद करते हुए कहा, "भाई आजकल बंगाल के साहित्यगगन में दो शरत्-रूपी चन्द्र आलोकित हैं। आप उनमें से कौन से हैं?"

शरत् बाबू ने हँसते हुए कहा, "चरित्रहीन!"

('चरित्रहीन' शरत्चंद्र जी का बहुत प्रसिद्ध उपन्यास है)

पुतले की सीख

कहानी

हरिन्दर सिंह गोगना

दशहरे का त्योहार होने के कारण नकुल और पारस ने मिल कर रावण का पुतला बना कर तैयार कर लिया था। नकुल के पिताजी ने बताया था कि कोरोना वायरस के कारण इस बार वह दशहरा नहीं देख पाएंगे। दोनों भाइयों ने सोचा क्यों न वह रावण का पुतला बना कर घर के आँगन में जलाएं।

नकुल की माँ ने देखा कि नकुल और पारस बिना बताए ही दुकान से रावण के पुतले के लिए पटाखे भी ले आए थे और घर आकर हाथ भी न धोए थे।

उन्होंने कितनी बार नकुल और पारस को समझाया भी था कि हाथ न धोना और हाथों को बिना धोए मुँह पर लगाना आजकल कितना घातक हो सकता है। खास कर जब वह बाहर जाए।

अगले दिन शाम को जब नकुल और पारस रावण के पुतले में पटाखे लगा रहे थे तो रावण का पुतला बोल उठा। "अरे मुझे जला कर तुम्हें क्या मिलेगा?"

नकुल और पारस ने आश्चर्य से एक दूसरे की तरफ देखा। तभी रावण का पुतला फिर बोला, "हाँ, हाँ मैं रावण का पुतला ही बोल रहा हूँ और पूछ रहा हूँ मुझे जला कर तुम्हें क्या मिलेगा? पल भर की प्रसन्नता। यही तो सदियों

से लोग करते आ रहे हैं। मेरी एक भूल के लिए मुझे हर साल जला कर उत्सव मनाना नहीं भूलते।"

नकुल और पारस को विश्वास नहीं हो रहा था कि रावण का पुतला बातें भी कर सकता है। वह सांस रोके उसकी बातें ध्यान से सुनने लगे।

"जानते हो मैंने एक भूल की थी जिस का दण्ड मुझे आज तक भुगतना पड़ रहा है। मेरे मरने के बाद भी दुनिया मेरी भूल के लिए मुझे नहीं भूली।"

"हाँ मैं तुम्हें यह बातें इसलिए समझा रहा हूँ क्योंकि मैंने जो भूल की थी उसे सुधारने के लिए कभी यत्न नहीं किया। मुझे मेरे अपनों ने बहुत समझाया कि जो भूल मैं कर चुका हूँ उसे सुधार लूँ और अपने के साथ ही दूसरों के प्राण भी बचा लूँ। मगर मैंने हठ पकड़ ली थी और परिणाम सबके सामने था। मेरी एक भूल के कारण मेरे अपनों ने भी निर्दोष होते हुए अपने प्राण गवां दिए। यानि कि मैं उन सबका अपराधी हूँ जिन्होंने कोई अपराध नहीं किया था। तुम भी तो वही कर रहे हों।" रावण ने बहुत गहरी बात कह दी।

"हम अपराधी हैं...वो कैसे?" नकुल और पारस एक साथ बोले।

"तुम्हारे माँ पिताजी तुम्हें साफ सफाई रखने के लिए कहते हैं। लेकिन तुम उनका कहना नहीं मानते। आजकल कोरोना वायरस के कारण कितने लोग दम तोड़ रहे हैं यह सब उनकी असावधानी का ही तो परिणाम है। अगर तुम भी यही असावधानी बरतोगे और बड़ों का कहना नहीं मानोंगे तो तुम्हें भी मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है। तुम्हारी एक गलती और भूल से तुम्हारे अपनो की जान पर बन सकती है। जानते नहीं कोरोना वायरस लाग की बीमारी है। एक से दूसरे को होने वाली बीमारी। तुम्हें कोई हम नहीं कि स्वयं भी संकट में पड़ो और अपनों को भी संकट में डालों।" पुतला बोला।

दोनों भाई सोच रहे थे कि रावण का पुतला बता तो बिल्कुल ठीक कह रहा है।

तभी रावण का पुतला बोला, "और हाँ, मुझे भी जलाने से पहले अपने गंदे हाथ धोकर आओ।" नकुल और पारस अपने गंदे हाथों को देखने लगे। उनके हाथ बहुत मैले थे। फिर दोनों हाथ धोने चले गए। थोड़ी देर बाद रावण का पुतला जल रहा था। अब दोनों भाई स्वच्छ हाथों से माँ द्वारा बनाई मिठाई चख रहे थे। बुराई का पुतला जलने से पहले उन्हें अच्छी सीख दे गया था।

- पटियाला (पंजाब)

बाल प्रस्तुति

चींटी को जब गुस्सा आया

कहानी

राज आर्यन

लेकर चीनी चींटी आई,
मन किया उसे फूंकने को भाई।
एक फूंक जब हमने मारी,
चढ़ गई उसकी त्योरी भारी।

पीछे से चढ़ गई हाथ पर
काटूँगी अब अड़ी बात पर
काटा तो मेरा हाथ फूल गया,
उसे न मारूँ कसम खा गिया।।

- सैदपुर (बिहार)

बाल गीत

चंदा मामा

कविता
पवन कुमार पहाड़िया

शरद पूर्णिमा को मामाजी
रूप अनोखा लाते जी।
लगता नित बिन न्हाए आते
आज सभी को भाते जी।।
छत पर जा सुई से धागा
जितनी बार पिरोओगे।
उतनी ही आँखों में ज्योति
माँ कहती बढ़वाओगे।
क्या है सच यह जल्द बता दो
काहे राज छुपाते जी।।
छुटकी ने जब शतक लगाया
मैं पीछे बस तीस रहा।
सबने उसको दी शाबासी
मैं दाँतों को पीस रहा।
मुझको भी दे दो उस जैसी
ज्योति क्यूं सकुचाते जी।।
भेदभाव मत बरतो मामा
समझो हमें बराबर जी।
क्या लड़की क्या लड़का तुम भी
गलत हुए सरासर जी।।
दाग लगा क्या इस कारण ही
काहे ना बतलाते जी।।

- डेह (राज.)

आँख खुल गई

कहानी

उषा जायसवाल

अमर देव नाम के एक राजा थे जिनके राज्य में अनेक ऋषि, मनीषी, साहित्यकार, कलाकार एवं विद्वान रहते थे। राजा बड़े सूझ-बूझ से अपना राजकाज किया करते थे। उनके राज्य में प्रजा बहुत सुखी थी। राजा अमरदेव के राज्य में जहाँ वीर, पराक्रमी, साहसी सैनिकों की विशाल सेना थी, वहीं शास्त्रार्थ करने वाले महान पण्डितों एवं विद्वानों को भी दरबार में सम्मान होता था। प्राय: राजा धर्म की चर्चा अपने राज्य के विद्वानों के साथ करते थे। राजा अमर देव धार्मिक प्रवृत्ति के कारण ही इस प्रकार का आयोजन राज्य दरबार में होते रहते थे।

शरद पूर्णिमा का अवसर था। राजा ने शहर भर में समारोह मनाने की घोषणा कर दी। राजधानी में सांस्कृतिक, साहित्यक, धार्मिक सभी प्रकार के आयोजन हुए। बड़े-बड़े साहित्यकारों कवियों ने अपनी प्रतिभा प्रदर्शित की। कलाकारों ने पूरे नगर को सांस्कृतिक ढंग से सजाया सँवारा एवं नाटक आदि की प्रस्तुति करके राजा एवं प्रजा सभी के मन को जीत लिया। उधर धार्मिक आयोजनों में विभिन्न धर्म के विद्वानों, आचार्यों ने अपने-अपने प्रकार से धर्म की व्याख्या की, धर्म पालन के ढंग बताए और दया करुणा, प्रेम, सहिष्णुता का महत्व बनाते हुए धार्मिक जीवन निर्वाह करने की प्रेरणा दी। इस प्रकार के आयोजन का प्रभाव राजा एवं प्रजा दोनों पर पड़ा। प्रजा अपने आपसी द्वेष भूला कर प्रेम से जीने लगी। उन्हें यह बात अच्छी तरह समझ में आ गई कि धर्म का मतलब है प्रेम करुणा, दया। अब सभी सम्प्रदाय के लोग मिलकर भाई-चारे से रहना सीख गए थे। अब राजा के राज्य में सभी त्योहार सब एक दूसरे के साथ मनाते थे। इस प्रकार का परिवर्तन से राजा बहुत प्रसन्न थे। राजा अमरदेव ने यह निर्णय अपने मंत्रीपरिषद् में लिया था कि अब वर्ष में ऐसे महत्वपूर्ण समारोह मनाए जाएंगे। साथ ही राजा ने अपने व्यवस्थापकों को आदेश दिया कि महान साहित्यकार कलाकार एवं विभिन्न पंथों के उच्च कोटि के विद्वानों की सूची बनाई जाय ताकि उन्हें उनका उचित सम्मान किया जा सके। साथ ही उनके रहने की आजीवन व्यवस्था राजधानी में की जाय। राजा के आदेश का यथाशीघ्र पालन हुआ।

एक दिन राजा को सूचना मिली की एक बहुत बड़े संत पधारे हैं जो राजा से मिलना चाहते हैं। राजा धार्मिक प्रवृत्ति के थे। वह संतों का आदर करते थे इसलिए वह स्वयं संत से मिलने चल पड़े और संत को प्रणाम करके उन्हें राज दरबार में चलने का आग्रह किया। संत ने कहा- "राजन! मैंने आपकी महानता की चर्चा सुन रखी है। मैं भी आपसे मिलना चाहता था। आप स्वयं पधार गए

आपके दर्शन हो गए। मुझ साधु को राजसभा से क्या लेना देना।" राजा विनम्रता से बोले "महात्मन! आप मेरे साथ चलें, मेरा जीवन सफल हो जाएगा। फिर मैं आपको उन महान कलाकारों, साहित्यकारों एवं विद्वान मनीषियों से मिलवाऊँगा जिनके कारण मेरी प्रजा और मैं धन्य हुआ हूँ और मेरी कीर्ति इतनी हुई है- राज ने कहा। संत ने राजा के आग्रह को स्वीकार कर लिया।" राजा भी प्रसन्नता से विनयपूर्वक सन्त को अपने राजदरबार में ले गए। उनका यथाविधि स्वागत सत्कार किया और संत को विश्राम करने के लिए उचित प्रबंध कर दिया। विगत शरद पूर्णिमा पर जैसा समारोह हुआ था उसी प्रकार के समारोह का

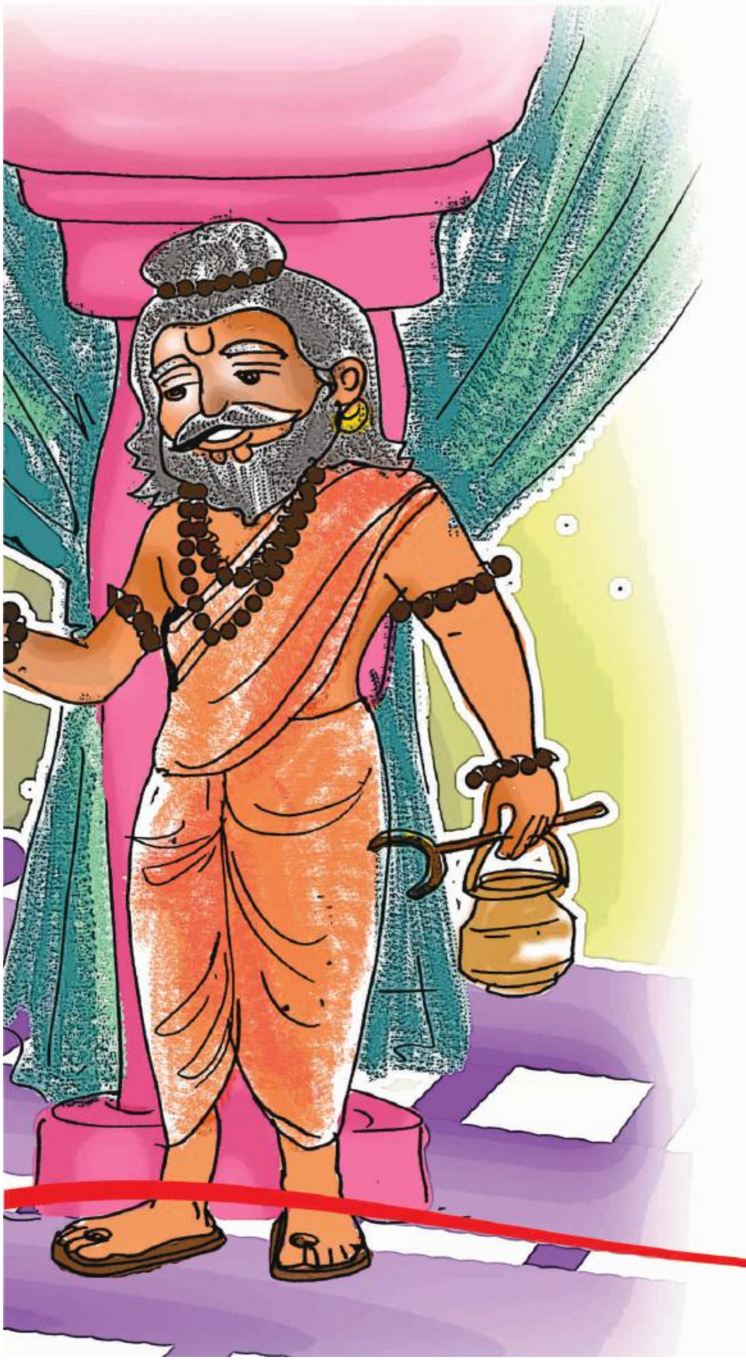

आयोजन करने की घोषणा कर दी। तैयारियाँ होने लगीं।

समारोह हुआ। राजा दरबार के लोगों के अलावा प्रजा ने भी समारोह में भाग लिया। आयोजन भव्यता से कई दिन चला, सभाएं हुई धार्मिक आयोजन भी हुए, परिचर्चाएँ भी हुई। इस बार का आयोजन पधारे हुए महान संत के सम्मान में रखा गया था और मुख्य अतिथि भी वही संत थे। कार्यक्रम के समापन से पूर्व मुख्य अतिथि से आशीर्वचनके लिए आयोजकों ने आग्रह किया। मुख्य अतिथि महात्माजी ने अपनी बात प्रारम्भ की, और कार्यक्रम की सराहना की। सभी महान विभूतियों की भी महानता का बखान किया परन्तु यह क्या? उन्होंने एक बात ऐसी कही जिससे न केवल राजा वरन सभी विद्वान आश्चर्यचकित थे। राजा को लगा उसके किए कराये पर पानी फिर गया। बच्चो! बात यह थी कि महात्मा जी ने कहा "जितनी भी महान विभूतियाँ हैं चाहे साहित्यकार, कलाकार या फिर धर्म ज्ञानी और ऋषि, मनीषी, शास्त्रकार या शास्त्रार्थ करने वाले ज्ञानी विद्वज्जन सभी से बसा हुआ यह राजधानी उजड़ जाय। यह मेरा आशीर्वाद है।" इतना सुनते ही राजा अमरदेव ने संत महात्मा के चरण पकड़ लिए और कहा- "महात्मन! मुझसे कौन सी त्रुटि हो गयी' क्या आवभगत में कुछ गलती हो गयी। आपने ने तो बहुत बड़ा श्राप मुझे दे डाला।"

संत के रूप में पधारे राज अमरदेव के गुरू संत भैखूदास थे। उन्होंने कहा- "वत्स! मैंने जो कुछ कहा उसमें एक रहस्य है। अच्छे लोग जहाँ बसेंगे वहाँ लोगों को अच्छाई ही सिखाएंगे और इस प्रकार न तुम्हारी राजधानी का ही भला होगा बल्कि तुम्हारे पूरे राज्य में अच्छी बातें लोग सीखेंगे। इस प्रकार तुम अमन और शांति स्थापित कर सकोगे।" राजा के नेत्र खुल गए। राजा समझ गए कि बुरे व्यक्ति यदि राज्यभर में रहते हैं तो समूचे राज्य का बुरा होता है। वे बुराई ही फैलाते हैं इसी प्रकार ये महान विभूतियाँ यदि मेरी राजधानी से बिखर कर राज्य भर में फैल जायें तो मेरे पूरे राज्य की जनता सुखी हो जायेगी। राजा मन ही मन सोचने लगे मेरे गुरू का आशीष मेरे लिए इसी रूप में फलित होगा।

- भोपाल (म.प्र.)

विषय एक

रेल

• राजकुमार जैन 'राजन'

नागिन सी बल खाती रेल।
मन को खूब लुभाती रेल।।
गाँव-गाँव और नगर-नगर
सबको सैर कराती रेल।
बीच पहाड़ों से निकले
नदिया-सी लहराती रेल।
नहीं पूछती जात-पांत को
सबको ही बिठलाती रेल।
गाती है छुक-छुक का गीत
सीटी मधुर बजाती रेल
अपनी-अपनी मंजिल तक
सबको है पहुँचाती रेल।
स्टेशन जब आ जाता है
मुस्काती रुक जाती रेल।
सबको अपने घर पहुँचा
तब अपने घर जाती रेल।
गुस्सा कभी न इसको आता
भाई चारा सिखलाती रेल
रुको नहीं मंजिल से पहले
हमको है सिखलाती रेल।
-आकोला (राज.)

हमारी रेल

• गोविन्द भारद्वाज

काम सभी के आती रेल,
मंजिल तक पहुँचाती रेल।

पूरब पश्चिम, उत्तर, दक्षिण
सभी दिशा में जाती रेल।

जाति-धर्म का भेद नहीं,
सबको साथ बिठाती रेल।

चाहे जैसी भी ऋतु हो
तनिक नहीं घबराती रेल।

अपनी डगर पर चलती है,
थोड़ी- सी बलखाती रेल।

टिकिट लिये जो करे यात्रा,
उनका साथ निभाती रेल।

सुख-सुविधाएं दे हमको
स्नेह हमारा पाती रेल।

मंगल यात्रा करे कामना,
सबको खूब लुभाती रेल।
- अजमेर (राज.)

कल्पना अनेक

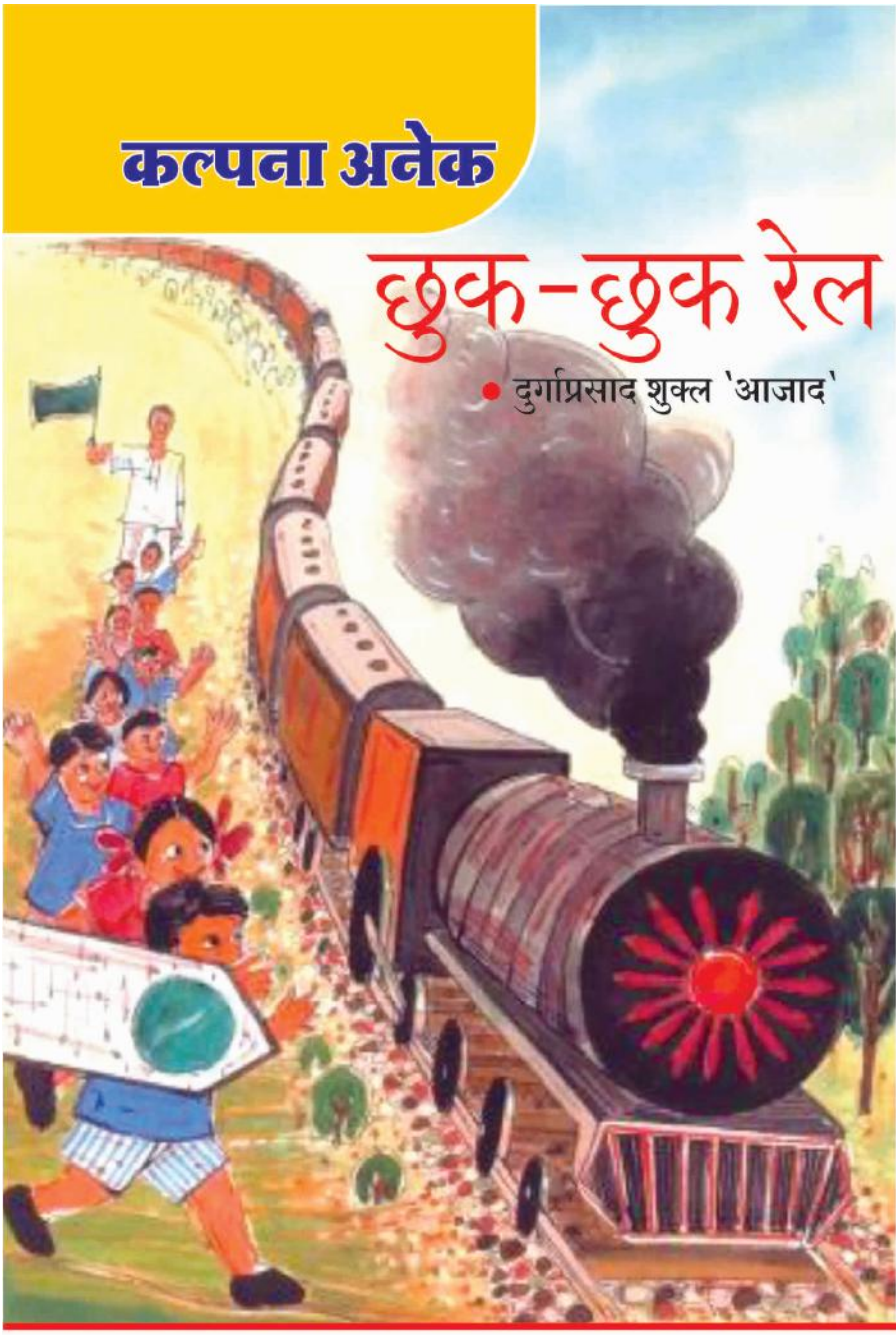

छुक-छुक रेल

• दुर्गाप्रसाद शुक्ल 'आजाद'

खूब चली, खूब चली।
छुक-छुक-छुक कर रेल चली।।
आगे बढ़ना, आगे चलना,
रहता इसका काम।
जब तक मंजिल मिल ना जाती,
करती ना आराम।।
लगती इसकी चाल भली।।
खूब चली, खूब चली।
छुक-छुक-छुक कर रेल चली।।
भेदभाव को यह ना जाने,
परहित सेवा जो पहचाने।
सबको अपने पास बुलाये,
झण्डी का संकेत में जाने।।
पीछे छूटे गाँव गली।।
खूब चली, खूब चली।
छुक-छुक-छुक कर रेल चली।।
अपना लक्ष्य बनाओ कहती,
सुख-दुख में भी हँसती रहती।
हर बाधा को तोड़-छोड़कर,
अपनी मँजिल तक है बढती।।
लगती जैसे मटर फली
खूब चली, खूब चली
छुक-छुक-छुक कर रेल चली।।

- लखनऊ (उ.प्र.)

आपकी कविता

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'रेलगाड़ी' विषय पर ही अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

थोड़ी सी हिम्मत

कहानी

पवन कुमार वर्मा

"माँ माँ! जल्दी आओ!" माधव जोर-जोर से चिल्ला रहा था।

"हाँ हाँ! आ रही हूँ कहाँ हो तुम!" माँ उसकी आवाज सुनकर घबरा गयी।

"स्नानगृह में!" माधव फिर जोर से चीखा।

"क्या हुआ? दरवाजा तो खोलो।" माँ उससे बोलीं।

"नहीं खोल सकता।" माधव अब रोने लगा।

"बेटा! दरवाजा नहीं खोलोगे, तो मुझे कैसे पता चलेगा कि क्या हुआ?" माँ बहुत कठिनाई से बोल पायीं। वह बहुत परेशान थीं।

"लेकिन वह दरवाजे पर ही है।" माधव रोते हुए बोला।

"कौन दरवाजे पर है? साफ-साफ बोलो।" माँ दरवाजे को जोर जोर से पीटने लगीं।

"तिलचट्टा!" माधव धीमे से बोला।

अब तो माँ का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँचा गया। उनकी परेशानी गुस्से में बदल गयी।

"तिलचट्टे से डर रहे हो? इतने छोटे कीड़े से।" माँ चिल्लाकर बोलीं।

"मैं बाहर कैसे आऊँ?" माधव रोते हुए बोला।

"अरे! उस पर थोड़ा पानी फेंक दो। वह भाग जायेगा।" माँ अपने गुस्से को दबा कर बोलीं।

"कहीं वह मेरी ही ओर आ गया तो?" माधव बोला।

"नहीं माँ! मैं नहीं कर सकता। मुझे उससे बहुत डर लगता है।" इतना कहकर माधव जोर-जोर से रोने लगा। माँ लगातार दरवाजा पीट रही थीं, साथ ही उसकी हिम्मत बढ़ाने का प्रयास भी कर रही थीं।

अचानक माधव जोर से चिल्लाया। माँ बुरी तरह घबरा गयीं। वह और जोर-जोर से दरवाजा पीटने लगीं। इतना शोर गुल सुनकर वह तिलचट्टा भी घबरा गया। वह वापस नहीं की ओर भाग गया। उसके जाते ही माधव भी दरवाजा खोल कर बाहर आ गया।

लेकिन यह क्या? बाहर आते ही माधव जोर-जोर से रोने लगा। माँ ने उसे बहुत समझाया, उसका साहस बढ़ाया। तब जाकर वह थोड़ा शान्त हुआ।

इस तिलचट्टे ने तो उसे परेशान कर रखा था। वैसे तो पता नहीं वह कहाँ छुपा रहता है? लेकिन जैसे ही वह स्नानगृह में जाता है, वह सामने प्रकट हो जाता है। आज तो अति हो गई। बिल्कुल दरवाजे पर ही आकर बैठ गया। माधव बहुत देर तक सुबकता रहा।

"चलो माधव! शीघ्र आ जाओ। मैंने टेबल पर नाश्ता लगा दिया है।" माँ ने उसे आवाज लगायी।

माधव बिना कुछ बोले जल्दी-जल्दी कपड़े पहनने लगा। अपने बाल सँवारे और फिर नाश्ते की मेज पर आ गया। आज वह कुछ ज्यादा ही उदास था। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह तिलचट्टे से कैसे छुटकारा पायें?

"क्या बात है माधव? अब भी डर लग रहा है।" माँ उसे चिढ़ाते हुए बोलीं। लेकिन उसने कोई उत्तर नहीं दिया। माँ हँस पड़ी।

"देखो बेटा! मैंने आज गेहूँ धोकर छत पर फैलाया है। आसपास के पक्षी और गिलहरियाँ गेहूँ देखते ही छत पर आ जायेंगे। वो जितना खायेंगे नहीं, उतना इधर-उधर फैला देंगे। इसलिए नाश्ता करने के बाद छत पर चले जाओ। तुम्हे देखकर वे नहीं आयेंगे।" माँ उससे बोलीं।

माधव ने उनकी बात का तो कोई जवाब नहीं दिया। लेकिन उसने शीघ्रता से अपना नाश्ता समाप्त किया और छत पर चला गया।

माँ की बात बिलकुल सही थी। वहाँ तो पहले से ही कई तरह के पक्षी और गिलहरियाँ मौजूद थे और वे सब जमकर भोज का आनंद ले रहे थे।

जैसे ही माधव ऊपर पहुँचा। सबके भाग खड़े हुए। उन्हें भागता देखकर माधव भी उनके पीछे दौड़ा। फिर तो वे सब दूर चले गये। माधव सीढ़ियों के पास बने एक

छोटे से मचान पर आकर बैठ गया। उसके वहाँ से हटते ही पक्षी और गिलहरियाँ गेहूँ के पास आने लगे।

इस बार माधव ने पास पड़ी एक छोटी छोटी उठाई और उनकी ओर दौड़ा। उसे देखते ही सब फिर भागे। अब माधव गेहूँ के पास ही एक ओर बैठ गया। फिर तो वहाँ कोई नहीं आया। अगर कोई आता भी, तो वह माधव के हाथ में छड़ी देखकर भाग जाता।

फिर भी कुछ पक्षी छत पर उतरने की हिम्मत जुटा लेते, तब माधव अपनी छड़ी को छत पर जोर से पटक देता। जिससे सब डर के भाग जाते। माधव के लिए भी अब यह एक खेल हो गया। पक्षियों को उड़ाने में उसे खूब आनन्द आ रहा था।

"ये छड़ी तो बड़े काम की है।" माधव मन ही मन बुदबुदाया।

अगले दिन माधव जब नहाने के लिए स्नानगृह में गया तो तिलचट्टे का डर उसे फिर सताने लगा। लेकिन तभी उसे उस छोटी छड़ी की याद आ गयी। वह दौड़कर ऊपर गया और वह छड़ी ले आया। फिर उसे अपने साथ लेकर वह नहानी (स्नानगृह) में गया और बड़े आराम से नहाने की तैयारी करने लगा।

तभी उसे वह तिलचट्टा नाली से बाहर आता दिखाई पड़ा। माधव ने अपनी छड़ी उठायी और उसके पास जाकर छड़ी को जोर से धरती पर पटका। फिर क्या था। तिलचट्टा डर कर वापस नाली में भाग गया। उसकी दोबारा निकलने का साहस भी नहीं हुआ।

उसे पुन: नाली में भागता देखकर माधव का डर भी छूमन्तर हो गया। आज उसने थोड़ी सा साहस जुटाकर अपना डर सदा के लिए समाप्त कर लिया।

- शिवपुर, वाराणसी (उ.प्र.)

(वल्लभ भाई पटेल जयंती : ३१ अक्टूबर)

साहस की विजय

प्रसंग

सांवलाराम नामा

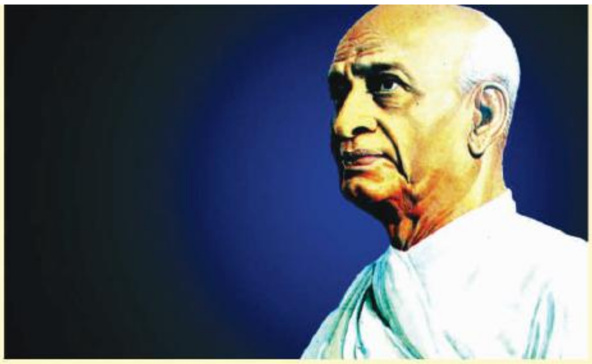

नड़ियाद (गुजरात) की एक पाठशाला का नियम था, जो विद्यार्थी उसमें पढ़ते थे, वह एक निश्चित की गई दुकान से ही पुस्तकें, लिखने पढ़ने का सामान आदि खरीदा करें।

बात यह थी कि वह दुकान विद्यालय के ही एक अध्यापक की थी। दुकान से उसे लाभ होता था, इसलिए इस प्रकार की आज्ञा प्रसारित की गई थी।

करमसद ग्राम का एक ग्रामीण बालक भी उसमें भर्ती हुआ। परन्तु उसे यह प्रतिबंध अप्रिय ही नहीं अनैतिक दबाव भी लगा। विशेषकर उस स्थिति में जबकि यह प्रतिबंध स्वार्थपूर्ण उद्देश्य की पूर्ति के लिए था। साहसी दबंग स्वभाव से अच्छे और नटखट उस विद्यार्थी ने आन्दोलन उठाया कि कोई इस कमीशनखोर दुकान से पुस्तकें, लिखाई पढ़ाई की सामग्री न खरीदें।

आन्दोलन तीव्रता पकड़ गया। सब विद्यार्थियों ने उसमें भाग लिया। अंत में शिक्षक महोदय को झुकना ही पड़ा।

जीवन के प्रारम्भ से झूठ, बुराइयों, बेईमानी आदि के विरुद्ध में संगठित मोर्चा जमाने वाला अदम्य साहसी यह बालक और कोई नहीं, सरदार वल्लभ भाई पटेल थे। जिन्होंने आगे जाकर भारत की स्वतंत्रता के लिए अंग्रेजी सरकार से लोहा लिया और उन्हें सात समुद्र पार भगा दिया।

- भीनमाल (राज.)

बालमन

लघु कहानी

विनीता मोटलानी

आज अमन का जन्मदिन है। हमेशा की तरह माँ ने गरीब बच्चों में बांटने के लिए मौसमी फल में केले लिए और अमन के कहे अनुसार कुछ लड्डू ले लिए। अमन को लेकर माँ वहाँ आई जहाँ पर गरीब बस्तियाँ थीं।

वहाँ पहुँच कर माँ ने अमन को सब बच्चों को एक एक केला और एक एक लड्डू देने के लिए कहा। जब अमन ने सब बच्चों में केले व लड्डू बाँट दिए तो उसका ध्यान एक दूर खड़ी अम्मा की तरफ गया जो बहुत आशापूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देख रही थीं।

अमन माँ के पास आया और बालो - माँ एक केला और एक लड्डू दे दो।

माँ बोली - मगर सब बच्चों में बँट तो गया।

अमन ने अंगुली से संकेत से इशारा करके बताया कि वह अम्मा जी को देना है। माँ हँस दी वह बच्चा थोड़ी है।

अमन बोला- उस दिन जब मैं दादी के साथ खेल रहा था और आपने मुझे लड्डू दियाथा तब दादी ने खाने के लिए माँगा तो आप ही तो बोली थी बच्चे और बूढ़े एक समान होते हैं। अमन तुम दादी को भी खिला दो।

अमन की बात सुनकर माँ निरुत्तर हो गई और उसके हाथ में एक केला और एक लड्डू पकड़ा दिया अम्मा जी को देने के लिए...

- इन्दौर (म.प्र.)

लांस नायक अलबर्ट एक्का

२७ दिसम्बर १९४२ को झारखण्ड जो उस समय बिहार प्रांत का ही एक भाग था इसी झारखण्ड जरी गाँव जिला गुमला निवासी एक ईसाई परिवार में जूलियस और मरियम के घर एक वीर आत्मा ने जन्म लिया नाम था अल्बर्ट एक्का। अच्छे लड़ाके कुशल निशानेबाज और हॉकी के बढ़िया खिलाड़ी अल्बर्ट बीस वर्ष की आयु में बिहार रेजीमेंट में भरती हुए। वह उनका इक्कीसवाँ जन्मदिन था। २७ दिसम्बर १९६२ जो बाद में लांसनायक के रूप में ब्रिगेड ऑफ द गाड्र्स की १४वीं बटालियन में भेज दिये गए।

१९७१ भारत-पकिस्तान का युद्धकाल था लांसनायक अल्बर्ट की बटालियन को गंगासागर जो अगरतला से कुछ ही दूर पश्चिम में है वहाँ पाकिस्तान की रक्षापंक्ति को कब्जे में लेने का आदेश मिला। इस मोर्चे पर दुश्मन बहुत मजबूत था उसकी लाइट मशीनगन्स भारतीय जाँबाजों पर ताबड़तोड़ गोली बरसा रही थीं। अल्बर्ट अपने जवानों पर बरसती इस आफत से अधीर हो उठा और अकेले ही पाकिस्तानी बंकर पर चढ़ दौड़ा देखते ही देखते उसकी बंदूक ने दो पाक सैनिकों की जीवन लीला समाप्त कर दी पाकिस्तानी मशीनगन खामोश हो गयीं।

घायल अल्बर्ट निरंतर शत्रु के बंकर ध्वस्त करते बढ़ते गए। अचानक कायर पाकिस्तानी सैनिकों ने एक घर की दूसरी मंजिल से छुप कर गोलियाँ चला दी। भारतीय सैनिकों में कुछ ने प्राण गँवाए कुछ को ठिठकना पड़ा। अल्बर्ट फिर आगे बढ़ा और अपने हथगोले से एक शत्रु के चीथड़े उड़ा दिये पर शत्रु की गोली वर्षा थमी नहीं थी। रक्त से लथपथ अल्बर्ट कोहनी के बल रेंगते हुए शत्रु के बंकर में जा घुसे और अपनी बंदूक से पाकिस्तानी तोपची को मार डाला मशीनगन वालों को सदा के लिये सुला दिया और अपनी सेना का रास्ता साफ कर दिया।

अल्बर्ट आखिरी सांस तक लड़े और ३ दिसम्बर १९७१ गंगासागर के काजीपथरी में तलाशी अभियान में बंगलादेश में शहीद हो गए। यह वही युद्ध था जिसमें १७ दिसम्बर को पाकिस्तान टूटा और बांग्लादेश का जन्म हुआ। लांस नायक अल्बर्ट एक्का को मरणोपरांत 'परमवीर चक्र' से सम्मानित कर भारत गर्वित हुआ।

पुस्तक परिचय

देख लो जग सारा
मूल्य ४००/-
प्रकाशन - साहित्यागार,
धामाणी मार्केट की गली,
चौड़ा रास्ता, जयपुर ३०२००३ राज.

हिन्दी बाल साहित्य की वरिष्ठ रचनाकार डॉ. विमला भण्डारी द्वारा संपादित यात्र-वृत्तांतों का बृहद् संकलन जिसमें भारत के जाने माने साहित्यकारों द्वारा भारत की चातुर्दिक यात्राओं के रोचक वर्णनों के साथ ही एक अंश विश्वदर्शन का भी है।

चलें भ्रमण की ओर
मूल्य २५०/-
प्रकाशन- नमन प्रकाशन
४२३१/१, अंसारी रोड़, दरियागंज
नई दिल्ली ११०००२

हिन्दी बाल साहित्य की कुलश रचनाकार डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता' द्वारा लिखित दस रोचक एवं ज्ञानवर्धक यात्रा वृत्तांत जिनमें सुरम्य प्राकृतिक और ऐतिहासिक स्थानों की झाँकी परिलक्षित है।

चीन के वे दस दिन
मूल्य १३५/-
प्रकाशन- तक्षशिला प्रकाशन
९८-ए, हिन्दी पार्क, दरियागंज
नई दिल्ली ११०००२

हिन्दी बाल साहित्य की सशक्त रचनाकार डॉ शशि गोयल की चीन यात्रा का रोचक वृत्तांत जिसमें इस देश की कई जानकारी समाहित है।

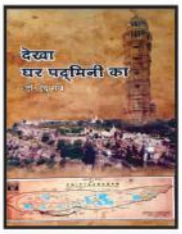

देखा घर पद्मिनी का
मूल्य १००/-
प्रकाशन- अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी साहित्य
सेवा एवं शोध संस्थान
गुरुग्राम (हरियाणा)

हिन्दी बाल साहित्य की प्रसिद्ध रचनाकार डॉ. इन्दुराव द्वारा महारानी पद्मावती के राजस्थान स्थित चित्तौड़दुर्ग का ऐतिहासिक जानकारियों से समृद्ध यात्रा वृतांत जो आपको राष्ट्रीय चेतना से भर देगा।
- संपादक डॉ. विकास दवे

कैसा हो मेरा घर
संपर्क- ३, वी.आय.पी,
धनश्री नगर, इन्दौर ४५२००९
(म.प्र.)

देवपुत्र के संपादक डॉ. विकास दवे द्वारा भारतीय घर को सुन्दर बहुरंगी चित्रों एवं सूत्रात्मक अनुकरणीय बिन्दुओं द्वारा अत्यंत सरल व रोचक ढंग से तैयार की गई ऐसी पुस्तिका जिसे हर भारतीय परिवार को पढ़ना और समझना चाहिए।

ताक धिना धिन ताक

कविता
अनुरूपा चौघुले

अकड़ू बकड़ू दो थे बन्दर,
खेल रहे थे पकड़-पकड़।
अज्जू-गज्जू हाथी भिड़ गए,
सूण्ड लड़ाते पटक-पटक।।
सोना चिरैया प्यारी-प्यारी,
दाना चुगती पट-पट-पट।
बाघ तेंदुए प्यासे आए,
पानी पीते गट-गट-गट।।
बित्ते-भर की गिलू गिलहरी,
झाड़ों पर दौड़े सरपट।
भारी भरकम भालू जी ने,
शहद कर लिया पल में चट।।
जल की रानी मछली कैसे,
तैर रही है सर-सर-सर।
पेट फुलाकर मेंढक बोले,
सुनलो उनकी टर-टर-टर।।
जंगल में हरियाली छाई,
बारिश होती टप-टप-टप।
मोर नाचते सबने देखा,
ताक-धिना-धिन-ताक।।
ताक-धिना-धिन-ताक।।
- इन्दौर (म.प्र.)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०१८-२०२०
आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०९/२०२०
प्रेषण तिथि ३०/०९/२०२०
प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क
180/-

आजीवन शुल्क
1400/-

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

देवपुत्र अब Jio Net पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना